बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 31 ● नई दिल्ली ● शनिवार 08 नवम्बर 2025 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन

बी-2/370, सुल्तानपुरी

दिल्ली-86

राहुल गांधी मानसिक रूप से दिवालिया, धर्मेंद्र प्रधान बोले- उनका हाइड्रोजन बम हो गया निष्क्रिय

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने शुक्रवार को 2024 के हरियाणा विधानसभा चुनावों में वोट घोखाधड़ी के कांग्रेस नेता राहुल गांधी के आरोपों पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने उनके आरोपों को झूठा बताया और दावा किया कि राहुल गांधी मानसिक रूप से दिवालिया हैं। उन्होंने आगे कहा कि राहुल गांधी, जिन्हें उन्होंने झूठ बताया, एक नया स्टार्टअप चला रहे हैं जो झूठ फैलाने और झूठे आख्यान गढ़ने पर केंद्रित है। एएनआई से बात करते हुए, धर्मेंद्र प्रधान ने कहा कि उन्होंने तीन दिन पहले एक हाइड्रोजन बम गिराने का दावा किया था। वह बम धराशायी हो गया... जो व्यक्ति खुद झूठा है और झूठे तथ्य प्रस्तुत करता है, वह एक नया स्टार्टअप चला रहा है

दिल्ली के इंदिरा गांधी पर दिखी Digital India की अलग तस्वीर, सर्वर डाउन होते ही पूरा आसमान ठहर गया

नई दिल्ली। देश के सबसे व्यस्त हवाई अड्डों में से एक, दिल्ली के इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर आज सुबह यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा, जब एयर ट्रैफिक कंट्रोल का सर्वर अचानक ठप हो गया। इस तकनीकी गड़बड़ी के कारण 100 से अधिक उड़ानें प्रभावित हुईं और कई घंटों तक उड़ान संचालन में अफरातफरी मची रही। सुबह करीब 8 बजे से एयरपोर्ट पर भीड़ बढ़ने लगी, क्योंकि ATC का स्वचालित संदेश प्रणाली बंद हो गया था। मजबूरन, एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स को उड़ानों की क्लियरेंस और लैंडिंग-डिपार्चर मैनुअली संभालनी पड़ी। एयरपोर्ट अथॉरिटी ऑफ इंडिया ने बयान जारी कर कहा, तकनीकी दिक्कत के कारण ATC का AMSS सिस्टम काम नहीं कर रहा है। कंट्रोलर्स फिलहाल मैनुअली फ्लाइट प्लान प्रोसेस कर रहे हैं। हमारी तकनीकी टीम इसे जल्द बहाल करने में जुटी है। यात्रियों के सहयोग के लिए हम आभारी हैं। इसी बीच, दिल्ली इंटरनेशनल एयरपोर्ट लिमिटेड ने भी सुबह 8:34 बजे पुष्टि की कि समस्या ,ज्ञष्ट सिस्टम में तकनीकी खामी की वजह से है, और सभी एजेंसियां मिलकर स्थिति को सामान्य करने की कोशिश कर रही हैं। उधर, देश की सबसे बड़ी एयरलाइन इंडिगो ने कहा कि दिल्ली और उत्तर भारत के कई हिस्सों में फ्लाइट ऑपरेशन्स पर असर पड़ा है। कंपनी ने यात्रियों से धैर्य रखने की अपील की और कहा कि हमारी ग्राउंड और केबिन टीमें आपकी असुविधा कम करने की पूरी कोशिश कर रही हैं। एयर इंडिया ने भी इसी तरह का बयान जारी करते हुए कहा कि यह व्यवधान अप्रत्याशित है और हमारे नियंत्रण से बाहर है, लेकिन यात्रियों की मदद के लिए हर संभव प्रयास किया जा रहा है। सुबह 9 बजे तक दिल्ली एयरपोर्ट के रनवे पर लंबी कतारें थीं। कई विमान हवा में होल्डिंग पैटर्न में घूमते रहे जबकि कुछ को

नजदीकी एयरपोर्ट्स की ओर डायवर्ट किया गया। इससे उत्तर भारत के एयर रूट्स पर भी व्यापक असर पड़ा। देखा जाये तो दिल्ली एयरपोर्ट की इस घटना ने एक बार फिर सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या भारत की हवाई सुरक्षा व्यवस्था इतनी नाजुक है कि एक सर्वर डाउन होते ही पूरा सिस्टम रुक जाए? यह केवल तकनीकी त्रुटि नहीं, बल्कि प्रबंधन और आकस्मिकता की विफलता का प्रतीक है। जिस देश में हर मिनट हवाई यात्रियों की संख्या लाखों में पहुँच रही है, वहाँ अगर सबसे अहम हवाई यातायात नियंत्रण प्रणाली ही एक सर्वर पर निर्भर हो, तो यह सुरक्षा का गंभीर खतरा है।

सरकार और एयरपोर्ट अथॉरिटीज़ बार-बार डिजिटल इंडिया और स्मार्ट इन्फ्रास्ट्रक्चर की बात करती हैं, लेकिन जब ATC जैसी संवेदनशील व्यवस्था में बैकअप सर्वर, ऑटो-स्विचिंग या ब्लाउड सिंक्रोनाइज़ेशन जैसी बुनियादी व्यवस्थाएँ नहीं हैं, तो यह स्मार्ट सिस्टम की पोल खोल देता है। यह भी ध्यान देने योग्य है कि एटीसी के तकनीकी ठप पड़ने का मतलब केवल देरी नहीं है– यह सुरक्षा से जुड़ा मामला है। जब विमान हवा में हैं और कंट्रोल सिस्टम डाउन हो जाए, तो हर सेकंड मायने रखता है। मैनुअल ऑपरेशन जोखिमपूर्ण होता है, और ऐसी स्थिति में किसी भी मानवीय त्रुटि की कीमत बहुत बड़ी हो सकती है। यह घटना यह भी बताती है कि भारत के एयर ट्रैफिक नेटवर्क को तकनीकी उन्नयन की सख्त जरूरत है। इंडिगो और एयर इंडिया जैसी एयरलाइंस को जिस पेशंस की अपील करनी पड़ती है, वह असल में सिस्टम की मजबूरी की स्वीकारोक्ति है। सरकार और AAI के लिए जरूरी सबक की बात करें तो Backup redundancy system हर बड़े एयरपोर्ट पर सक्रिय और स्वत कार्यशील होना चाहिए। साथ ही Periodic stress testing और disaster simulation drills केवल कागज़ों में नहीं, वास्तविक रूप में लागू होनी चाहिए। इसके अलावा, Data mirroring & real-time monitoring की व्यवस्था केंद्रीय सर्वर से सुनिश्चित की जाए। साथ ही यात्रियों को सूचना प्रणाली पारदर्शी और त्वरित हो ताकि अफवाहें या घबराहट न फैले। बहरहाल, दिल्ली एयरपोर्ट की सुबह की यह गड़बड़ी केवल एक तकनीकी घटना नहीं थी, यह टेक्नोलॉजी पर अंधे भरोसे की चेतावनी थी। जिस देश ने चाँद और मंगल तक पहुँच बनाई है, वहाँ अपने ही आसमान में उड़ानें इसलिए रुक जाएँ क्योंकि सर्वर डाउन है, यह अस्वीकार्य है। भारत को केवल डिजिटल नहीं, सुरक्षित और भरोसेमंद टेक्नोलॉजिकल इंफ्रास्ट्रक्चर की ज़रूरत है वरना अगली बार टेक्निकल ग्लिच सिर्फ़ देरी नहीं, त्रासदी भी बन सकती है।

अहमदाबाद प्लेन हादसे में पायलट की गलती नहीं, 91 साल के पिता को सुप्रीम कोर्ट ने कहा- खुद पर बोझ मत रखिए

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने एयर इंडिया बोइंग 787-8 ड्रीमलाइनर के पायलट-इन-कमांड दिवंगत कैप्टन सुमीत सभरवाल के पिता पुष्कर राज सभरवाल द्वारा दायर एक याचिका पर केंद्र, डीजीसीए और अन्य अधिकारियों को नोटिस जारी किया है। यह विमान जून में अहमदाबाद में दुर्घटनाग्रस्त हो गया था और इसमें 260 लोग मारे गए थे। याचिका में एक सेवानिवृत्त न्यायाधीश की निगरानी में निष्पक्ष, पारदर्शी और तकनीकी रूप से सुदृढ़ जाँच की माँग की गई है। सुनवाई के दौरान, न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने याचिकाकर्ता को संबोधित करते हुए कहा कि यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है कि यह दुर्घटना हुई, लेकिन आपको यह बोझ नहीं उठाना चाहिए कि आपके बेटे को दोषी ठहराया जा रहा है। न्यायमूर्ति कांत ने आगे स्पष्ट किया कोई भी उसे दोषी नहीं ठहरा सकता। भारत में कोई भी यह नहीं मानता कि यह पायलट की गलती थी। न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची ने कहा कि प्रारंभिक एएआईबी रिपोर्ट में पायलट की ओर से किसी भी तरह की गलती का संकेत नहीं दिया गया है। याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन ने तर्क दिया कि विमान दुर्घटना जाँच ब्यूरो की चल रही जाँच स्वतंत्र नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं विमान के कमांडर का पिता हूँ... मेरी आयु 91 वर्ष है। यह एक गैर-स्वतंत्र जाँच है। इसे स्वतंत्र होना चाहिए था। इसमें चार महीने लग गए हैं। उन्होंने न्यायालय से विमान (दुर्घटनाओं और घटनाओं की जाँच) नियम के नियम 12 के तहत न्यायिक निगरानी में जाँच का आदेश देने का आग्रह किया। शंकरनारायणन ने बोइंग विमानों से जुड़े लगातार वैश्विक सुरक्षा मुद्दों पर भी प्रकाश डाला। पीठ ने याचिकाकर्ता द्वारा उद्धृत वॉल स्ट्रीट जर्नल के एक लेख पर विचार किया, जिसमें कथित तौर पर पायलट की गलती का संकेत दिया गया था। न्यायमूर्ति बागची ने कहा कि विदेशी मीडिया रिपोर्ट्स भारत में न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित नहीं करेंगी। न्यायमूर्ति कांत ने रिपोर्टिंग को घृणित बताया और दोहराया, भारत में कोई भी यह नहीं मानता कि यह पायलट की गलती थी।

हाउडी मोदी का अब क्या कहना है? ट्रंप ने भारत-पाक संघर्ष को लेकर दोहराए दावे तो कांग्रेस ने पीएम मोदी को घेरा

नई दिल्ली। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से भारत-पाकिस्तान संघर्ष रुकवाने और रूस से तेल खरीद कम करने को लेकर दिए जा रहे बयानों पर कांग्रेस ने एक बार फिर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर निशाना साधा है। पार्टी के नेता जयराम रमेश ने पूछा कि इस सब पर हाउडी मोदी' क्या कहेंगे? कांग्रेस के महासचिव (संचार) जयराम रमेश ने एक्स पर लिखा, ट्रंप ट्रैकर आज सुबह 59 पर पहुंच गया है। उन्होंने दोहराया- 1. उन्होंने 'ऑपरेशन सिंदूर' को 24 घंटे के भीतर व्यापार और शुल्क के दबाव से रोका। 2. भारत ने लगभग रूस से तेल खरीदना बंद कर दिया है। 3. वे प्रधानमंत्री मोदी से बात करते हैं, जो उन्हें भारत आने का निमंत्रण दे रहे हैं। संभवतः अगले साल तक। कांग्रेस नेता ने सवाल किया कि इस सब पर हाउडी मोदी क्या कहेंगे? बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति ने गुरुवार को मीडिया से बातचीत में फिर दोहराया कि उन्होंने मई में टैरिफ को हथियार बनाते हुए भारत-पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष को रोका था। उन्होंने कहा, आठ युद्धों में से जिनको मैंने खत्म किया, उनमें से पांच या छह मैंने आयात शुल्क (टैरिफ) के जरिए खत्म किए।

उदाहरण के तौर पर देखें- भारत और पाकिस्तान लड़ने लगे थे, दोनों परमाणु शक्ति संपन्न देश हैं। वे एक-दूसरे पर हमले कर रहे थे। आठ विमान गिराए गए। और मैंने कहा, 'अगर तुम लोग लड़ते रहोगे, तो मैं तुम पर शुल्क लगा दूंगा।' इस तरह मैंने 24 घंटे में मैंने युद्ध खत्म करा दिया। ट्रंप ने शुल्क को महान राष्ट्रीय रक्षा कवच दिया। उन्होंने यह भी कहा कि वे अगले साल भारत की यात्रा कर सकते हैं और मोदी के साथ वार्ताएं अच्छी चल रही हैं। उन्होंने कहा, सब ठीक चल रहा है। उन्होंने (प्रधानमंत्री मोदी) लगभग रूस से तेल खरीदना बंद कर दिया है। वे मेरे मित्र हैं, हम बात करते रहते हैं। वे चाहते हैं कि मैं भारत आऊं, और मैं आऊंगा। मेरा पिछला भारत दौरा शानदार था। जब उनसे पूछा गया कि क्या वे अगले साल भारत जाने की योजना बना रहे हैं, तो ट्रंप ने कहा, हो सकता है, हां।

एक्सप्रेसवे पर हो पेट्रोलिंग, स्कूलों में फेंसिंग जरूरी... आवारा कुत्तों को लेकर सुप्रीम कोर्ट का बड़ा आदेश

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को निर्देश दिया कि सभी आवारा कुत्तों को शैक्षणिक संस्थानों, अस्पतालों, बस अड्डों और रेलवे स्टेशनों के परिसरों से हटाया जाए। शीर्ष अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि नसबंदी के बाद ऐसे कुत्तों को उसी क्षेत्र में वापस नहीं भेजा जाना चाहिए। अदालत ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ-साथ राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण और नगर निकायों को एक और कड़ा निर्देश जारी किया। उन्हें यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया है कि राष्ट्रीय राजमार्गों, राय राजमार्गों और अन्य सड़कों से आवारा पशुओं को हटाया जाए। पीठ ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को एक समर्पित राजमार्ग गश्ती दल गठित करने का भी आदेश दिया, जो सड़कों पर ऐसे मवेशियों को पकड़ेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि उन्हें आश्रय गृहों में पहुँचाया जाए, जहाँ उनकी उचित देखभाल की जाएगी। यह निर्देश देश भर में कुत्तों के काटने के मामलों पर पीठ द्वारा की जा रही स्वतः संज्ञान कार्यवाही के तहत जारी किया गया है।

न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति संदीप मेहता और न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया की पीठ ने आदेश दिया कि इन स्थानों से आवारा कुत्तों को उठाने की ज़िम्मेदारी संबंधित स्थानीय स्व-सरकारी निकायों की होगी। उन्हें पशु जन्म नियंत्रण नियमों के तहत नसबंदी और टीकाकरण के बाद कुत्तों को निर्दिष्ट आश्रय स्थलों में स्थानांतरित करना होगा। न्यायालय ने कहा कि इन कुत्तों को वापस उसी स्थान पर छोड़ने से इस प्रक्रिया का पूरा उद्देश्य ही विफल हो जाएगा। न्यायालय ने कहा कि इसकी अनुमति देने से ऐसे संस्थानों को आवारा कुत्तों की उपस्थिति से मुक्त करने का उद्देश्य ही विफल हो जाएगा। पीठ ने सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को दो हफ्तों के भीतर सरकारी और निजी स्कूलों, कॉलेजों, चिकित्सा केंद्रों, सार्वजनिक परिवहन केंद्रों और खेल सुविधाओं की पहचान करने का निर्देश दिया। साथ ही, आठ हफ्तों के भीतर इन स्थानों को, अधिमानतः चारदीवारी से सुरक्षित करने का निर्देश दिया ताकि आवारा कुत्ते परिसर में प्रवेश न कर सकें। नियमित निगरानी और रखरखाव के लिए प्रत्येक चिन्हित स्थान के लिए एक नोडल अधिकारी नियुक्त किया जाएगा। नगर निकाय और पंचायतें कम से कम तीन महीने तक आवधिक निरीक्षण करेंगी और अनुपालन रिपोर्ट न्यायालय को प्रस्तुत करेंगी। यह आदेश कई सुनवाई के बाद आया है जहाँ न्यायालय ने पशु जन्म नियंत्रण नियमों के खराब क्रियान्वयन पर चिंता व्यक्त की थी। 3 नवंबर को, पीठ ने सरकारी कार्यालयों के अंदर कर्मचारियों द्वारा आवारा कुत्तों को खाना खिलाने की घटनाओं पर चिंता व्यक्त की, जबकि पहले भी भोजन क्षेत्रों को सार्वजनिक आवागमन स्थलों से दूर रखने के आदेश दिए गए थे।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण का संकट गहराया, सुप्रीम कोर्ट 12 नवंबर को मामले की करेगा सुनवाई

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में वायु प्रदूषण का संकट गहराता जा रहा है और हवा की गुणवत्ता खतरनाक स्तर पर पहुँच गई है। विशेषज्ञों और अधिकारियों ने वाहनों से निकलने वाले उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों में पराली जलाने को भी इसमें प्रमुख भूमिका निभाने वाला बताया है। भारत का सर्वोच्च न्यायालय 12 नवंबर को वायु प्रदूषण मामले की सुनवाई करेगा। कार्यवाही के दौरान, वकीलों ने स्थिति की गंभीरता पर जोर देते हुए कहा, जैसा कि अदालत को पता होगा, एनसीआर में वायु गुणवत्ता बिगड़ रही है। 3 नवंबर को अदालत ने आयोग और सीपीसीबी को हलफनामा दाखिल करने का निर्देश दिया था। इस मामले की सुनवाई के लिए अभी तक कोई निश्चित तिथि निर्धारित नहीं की गई है। सुनवाई सोमवार को हो सकती है। यह अत्यावश्यक है और हमें वास्तव में नहीं पता कि शहर की हवा लगातार खराब होती जा रही है, जबकि क्या हो रहा है। दो दिनों के थोड़े सुधार के बाद दिल्ली की वायु गुणवत्ता बेहद खराब श्रेणी में पहुँच गई। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) ने औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 311 दर्ज किया। विशेषज्ञों ने चेतावनी दी है कि कड़ी कार्रवाई के बिना, निकट भविष्य में राहत मिलना मुश्किल है। प्रदूषण में हालिया वृद्धि दिल्ली में वर्षों बाद पहली बार ग्रीन दिवाली मनाने के बाद हुई है। इस त्यौहार से पहले सुप्रीम कोर्ट ने 18 से 20 अक्टूबर के बीच दिल्ली-एनसीआर में ग्रीन पटाखों के इस्तेमाल की अनुमति दी थी, लेकिन केवल दो विशिष्ट समयावधियों के दौरान सुबह 6 बजे से 7 बजे तक और रात 8 बजे से 10 बजे तक। हालाँकि, कई निवासियों ने इन प्रतिबंधों का उल्लंघन किया। इसके अतिरिक्त, सुप्रीम कोर्ट ने केंद्रीय और राय प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों को 14 अक्टूबर से 25 अक्टूबर तक प्रतिदिन वायु गुणवत्ता की निगरानी करने और नियमित रिपोर्ट प्रस्तुत करने का निर्देश दिया था। सीपीसीबी के आंकड़े बताते हैं कि दिवाली के बाद दिल्ली के कई इलाकों में वायु गुणवत्ता सूचकांक 450 को पार कर गया, जिसकी वजह पटाखों का धुआं और पड़ोसी राज्यों में लगातार पराली जलाना है।

कॉलेज जाने वाली छात्राओं को सीएम रेखा गुप्ता ने दिया खास तोहफा! सरकार ने किया बड़ा ऐलान

नई दिल्ली। दिल्ली सीएम ने कॉलेज जाने वाली छात्राओं के लिए एक तोहफे का ऐलान किया है। सीएम की घोषणा के अनुसार दिल्ली के हर जिले में दृष्टिबाधित छात्राओं के लिए Hostel शुरू करने की तैयारी कर रही है। इस योजना की घोषणा दिल्ली सरकार के मंत्री रविंदर इंद्राज सिंह ने बीते दिन कलिंगा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज का निरीक्षण करने के बाद की। उन्होंने पिछली सरकारों पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए कहा कि उनकी उपेक्षा के कारण दिल्ली के कई छात्रावास बंद हो गए थे, लेकिन मौजूदा सरकार उन्हें फिर से खोलने का काम करेगी।

मंत्री रविंदर इंद्राज सिंह ने कहा कि सरकार का मुख्य ध्यान समाज के वंचित वर्गों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और एक सुरक्षित आवासीय वातावरण सुनिश्चित करने पर है। उन्होंने कहा कि सरकार छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए बंद पड़े हॉस्टलों को दोबारा खोलने और नए छात्रावास बनाने पर सक्रियता से काम कर रही है। मंत्री ने पुरानी सरकार पर आरोप लगाते हुए बताया कि जर्जर हालत और फंड की कमी के कारण साल 2024 में कई छात्रावास बंद कर दिए गए थे। ईसापुर आवासीय विद्यालय इन्हीं में से एक था, जिसे अनुसूचित जाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, अल्पसंख्यक और अनाथ छात्रों के लिए बनाया गया था। इस स्कूल में छात्रों को मुफ्त आवास, भोजन, वर्दी, स्टेशनरी और चिकित्सा सेवाएँ प्रदान की जाती थीं। साथ ही छात्रों के समग्र विकास के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और खेल सुविधाएँ भी दी जाती थीं। मंत्री सिंह ने आगे की योजनाओं की जानकारी देते हुए कहा कि सेवा पखवाड़ा के दौरान तिमारपुर में दृष्टिबाधित कॉलेज छात्राओं के लिए एक छात्रावास का उद्घाटन किया गया। सरकार की योजना दिलशाद गार्डन स्थित संस्कार आश्रम को भी फिर से खोलने की है। सबसे महत्वपूर्ण दिल्ली के प्रत्येक जिले में एक छात्रावास स्थापित करने की योजना बनाई जा रही है ताकि कॉलेज जाने वाली छात्राओं को सुरक्षित और किफायती आवास मिल सके।

हरियाणा में कांग्रेस क्या वाकई वोट चोरी के चलते हारी? हमने जो ग्राउण्ड पर देखा वो चौंकाने वाला था

नीरज कुमार दुबे ।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत को 'वोटों की चोरी' और हेराफेरी का परिणाम बताया है। राहुल गांधी ने एक तरह से सवाल उठाते हुए कहा है कि कांग्रेस को स्पष्ट चुनावी जीत की संभावना के बीच भाजपा आखिर कैसे स्पष्ट बहुमत हासिल कर सकती है? राहुल गांधी ने भारतीय निर्वाचन आयोग और भाजपा पर जो सवाल उठाये है उससे पहले उन्हें इस बात का जवाब देना चाहिए कि आखिर क्यों कांग्रेस को हरियाणा विधानसभा में विपक्ष का नेता नियुक्त करने में एक साल का समय लग गया? आखिर क्यों कांग्रेस हरियाणा में हुड्डा परिवार से बाहर के किसी नेता को नेतृत्व नहीं सौंप पाती? राहुल गांधी को समझना होगा कि समस्या मतदाता सूची में नहीं बल्कि उनके राज नेतृत्व में है। राहुल गांधी को हरियाणा में भाजपा की जीत के कारणों पर ध्यान देने की बजाय इस बात पर आत्ममंथन करना चाहिए कि कांग्रेस की करारी पराजय के कारण क्या रहे? सवाल उठता है कि हरियाणा की जिस जनता ने विधानसभा चुनावों से कुछ माह पहले लोकसभा चुनावों के दौरान कांग्रेस को अच्छा जन समर्थन दिया था उसने विधानसभा चुनावों में पार्टी से क्यों मुँह मोड़ लिया? प्रभासाक्षी की टीम ने हरियाणा विधानसभा चुनावों में पूरे राज्य में घूम घूमकर प्रचार को कवर किया था। सबसे पहली बात जो ध्यान में नजर आ रही थी वह यह थी कि कांग्रेस की हवा सिर्फ मीडिया में है जमीन पर नहीं। दूसरी बात यह थी कि हुड्डा गुट ने जिस तरह पूरे कांग्रेस पर कब्जा किया हुआ था उससे पार्टी के अन्य गुट बेहद नाराज थे। खासकर टिकटों के बंटवारे, चुनाव प्रचार में भूमिका आदि के मामले में जिस तरह कुमारी शैलजा के साथ कांग्रेस नेतृत्व ने भेदभाव किया था उसके चलते गुस्सा सिर्फ कांग्रेस कार्यकर्ताओं के मन में ही नहीं बल्कि समाज के भीतर भी दिख रहा था। खुद कुमारी शैलजा जिस तरह चुनावों के बीच नाराज चल रही थीं उससे हुड्डा गुट के प्रति गुस्सा उभर रहा था। कई सीटों पर मैंने देखा कि कांग्रेस के उम्मीदवार अपने प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ सिर्फ चुनाव नहीं लड़ रहे थे बल्कि वह पार्टी के भीतर मौजूद दूसरे गुटों से भिड़ने में ज्यादा समय लगा रहे थे। उनके चुनाव कार्यालय में बैठे लोग अपने प्रतिद्वंद्वी से ज्यादा पार्टी के ही नेताओं के खिलाफ बयानबाजी करने में मशगूल रहते थे। इसके अलावा, कांग्रेस ने कई ऐसे प्रत्याशियों को मैदान में उतार रखा था जोकि अपने पैसे के बलबूते ही जीत की उम्मीद कर रहे थे। मैंने देखा कि ऐसे ही कांग्रेस उम्मीदवारों का सारा जोर सिर्फ फिल्मी सितारों से प्रचार करवाने में है। एक दो सभा के बाद वह अपनी आरामगाह में चले जाते थे और फिर शाम को ही प्रचार के लिए निकलते थे। प्रचार के लिए निकलने से पहले मुद्दों को समझाने की बजाय उनका ज्यादा जोर अच्छे दिखने पर रहता था। एक कांग्रेस उम्मीदवार तो ऐसे भी दिखे जोकि दिन में ही इतना नशा कर लेते थे कि प्रचार करने की हालत में नहीं रहते थे, ऐसे में प्रचार की कमान उनके बेटे ने संभाल रखी थी। एक कांग्रेस उम्मीदवार का सारा जोर सिर्फ इसी बात पर था कि मतदाताओं को कैसे खुश किया जाये। हालांकि बातचीत में वह यह तक नहीं बता पा रहे थे कि उनके क्षेत्र की समस्याएं क्या है और उनकी पार्टी ने जो घोषणापत्र जारी किया है उसमें क्या वादे किये गये हैं। कई विधानसभा क्षेत्रों में कांग्रेस उम्मीदवारों की सभाओं में बच्चों की अच्छी खासी संख्या दिखती थी। पूछने पर बच्चे बताते थे कि उनके परिजन तो भाजपा को वोट देंगे यही नहीं, एक कांग्रेस उम्मीदवार की रैली में उम्मीदवार का जोरदार अंदाज में स्वागत करने वाली गांव की सरदारी ने भी मुझसे बातचीत में कहा कि गांव तो भाजपा को वोट देगा लेकिन सबका सम्मान करना हमारी परम्परा और संस्कृति है इसलिए किसी को निराश नहीं करते। इसके अलावा, हरियाणा में एक कांग्रेस उम्मीदवार ने पार्टी की सरकार बनने पर सरकारी नौकरियों के आवंटन को लेकर विवादित बयान दे डाला था जिससे कांग्रेस बैकफुट पर आ गयी थी। साथ ही एक बात पूरे हरियाणा में देखने को मिल रही थी कि हुड्डा पिता-पुत्र की रैलियों या रोड शो में आये कार्यकर्ता जिस तरह का हुड़दंग कर रहे थे उसके चलते लोगों के मन में खासतौर पर पिछड़ी जातियों के मन में खौफ पैदा हो रहा था। इस सबके अलावा, कांग्रेस हरियाणा में उसी अति-आत्मविश्वास की शिकार हुई जिसने 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को बड़ा नुकसान पहुंचाया था। वहीं हरियाणा विधानसभा चुनावों में भाजपा की जीत के कारणों को देखें तो सबसे बड़ा और अहम कारण यह रहा कि आरएसएस और भाजपा के बीच समन्वय बहुत बेहतर था। पूरे हरियाणा में कोई ऐसा विधानसभा क्षेत्र नहीं था जहां भाजपा के प्रवासी कार्यकर्ताओं की टोली चुनाव प्रबंधन के कार्य नहीं संभाल रही हो। भाजपा उम्मीदवारों के चुनाव कार्यालय में पार्टी कार्यकर्ता सिर्फ इसी बात में मशगूल दिखते थे कि मतदाता पर्चियां मतदाताओं तक और बस्ते बूथ एजेंटों तक समय से पहुँच जायें। इसके अलावा, हरियाणा में लगभग सवा नौ साल तक मुख्यमंत्री रहे मनोहर लाल खट्टर के खिलाफ उपजी नाराजगी को भांप कर भाजपा नेतृत्व ने भले उन्हें मुख्यमंत्री पद से हटा कर दिल्ली की राजनीति में स्थापित कर दिया था लेकिन खट्टर का मन हरियाणा में ही लगा देख कर ऐन चुनावों के समय एक और बड़ा निर्णय लेते हुए पूरे चुनाव प्रचार अभियान से खट्टर का नाम और उनकी तस्वीर गायब कर दी गयी। हमने पाया कि भाजपा की हर चुनावी रैली अथवा जनसभाओं के दौरान मंच पर या उसके आसपास लगने वाले पोस्टरों, बैनरों और होर्डिंगों में खट्टर का नाम और तस्वीर नहीं थी। यही नहीं हरियाणा सरकार की जिन उपलब्धियों के सहारे भाजपा ने चुनाव लड़ा उनमें भी खट्टर की तस्वीरें नहीं लगायी गयीं। भाजपा ने साधारण लोगों की तस्वीरों का इस्तेमाल चुनाव प्रचार सामग्री में किया। जैसे युवाओं की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि बिना खर्ची पर्ची नौकरी दी गयी। किसानों की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि 24 फसलों का एमएसपी दे रही हरियाणा सरकार, महिलाओं की तस्वीरों के साथ लिखा गया कि उज्ज्वला योजनाओं का लाभ दे रही भाजपा सरकार। इसी प्रकार अन्य उपलब्धियों का बखान करते हुए भी प्रचार सामग्री तैयार करवायी गयी जिसमें आम लोगों की तस्वीरें प्रकाशित की गयी थी। इसके अलावा, हरियाणा में कांग्रेस सिर्फ हवा में है जमीन पर नहीं, इस बात का पता जैसे ही भाजपा के शीर्ष नेतृत्व को चला वैसे ही उसने प्रचार के अंतिम 10 दिनों में अपनी पूरी ताकत झोंक दी थी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की चार जनसभाएं कराई गयीं और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह व उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ समेत तमाम मुख्यमंत्रियों को चुनाव प्रचार में उतार दिया गया। पूरे चुनाव प्रचार के दौरान कांग्रेस ने 70 से ज्यादा रैलियां और जनसभाएं कीं, जबकि भाजपा ने 150 सभाएं और रैलियां कर माहौल को पूरी तरह बदल दिया। इसके अलावा, हरियाणा में कांग्रेस ने जमीन तक इस बात को पहुँचाने में सफलता हासिल कर ली थी कि कांग्रेस आ रही है, भाजपा जा रही है। भाजपा ने इस हवा की चाल को धीमा करने के लिए परिवारवाद को मुद्दा बनाया और भूपिंदर सिंह हुड्डा के पिछले शासन की याद दिलाई जिससे माहौल बदलने लगा। भाजपा ने जनता के बीच इस धारणा को मजबूत किया कि अगर कांग्रेस आई तो निश्चित रूप से हुड्डा को कमान सौंपी जाएगी। कांग्रेस नेतृत्व ने भी बार-बार हुड्डा को ही कमान सौंपने के संकेत दिये जिससे फायदा होने की बजाय नुकसान होता दिखा क्योंकि हुड्डा को अपने पिछले कार्यकाल में सिर्फ रोहतक का सीएम माना जाता था और उन पर अपने आलाकमान को खुश रखने के लिए प्रदेश के संसाधनों का दुरुपयोग करने के आरोप भी है। कई क्षेत्रों के लोगों ने हमसे कहा कि हुड्डा ने सिर्फ रोहतक में काम किया जिससे वहां की जमीनों के रेट ज्यादा है और उनके इलाके की जमीनों का रेट बहुत कम है। इसके अलावा, भाजपा ने जिस एकजुटता और रणनीति के साथ हरियाणा में काम किया उससे पार्टी चुनावी मुकाबले में तेजी से वापसी करती दिखी। रैलियों, सभाओं और डोर टू डोर हुए प्रचार के बाद मिल रहे फीडबैक से भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह दिखा और इस उत्साह को और बढ़ाने के लिए पार्टी ने कोई कसर नहीं छोड़ी इसलिए 3 अक्टूबर 2024 को शाम पांच बजे चुनाव प्रचार थमने तक भाजपा के प्रदेश के बड़े नेता, दूसरे राज्यों के मंत्री और मुख्यमंत्री तथा केंद्रीय मंत्री जनता के बीच लगातार पहुंचकर भाजपा की सरकार तीसरी बार बनाने की अपील करते दिखे। खासतौर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जब बटेंगे तो कटेंगे वाला भाषण दिया तो उसके परिणामस्वरूप ध्रुवीकरण जोरदार ढंग से हुआ। इसके अलावा हरियाणा विधानसभा चुनावों के दौरान ही नवरात्रि का पर्व भी चल रहा था।

सम्पादकीय...

हमसफर

जब अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की अप्रत्याशित नीतियों ने पूरी दुनिया को अस्थिर कर दिया है, ऐसे समय में सभी देशों के लिए अपने संबंधों को नया रूप देना और मौजूदा रिश्तों को और मजबूत करना आवश्यक हो गया है। साथ ही, नए गठजोड़ बनाना भी समय की मांग है। यही कारण है कि हर देश अपने कूटनीतिक रीसेट बटन को दबा रहा है। भारत भी इससे अलग नहीं है। जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चीन की ओर दोस्ती का हाथ बढ़ाया, तो वे भी यही कर रहे थे और यह रणनीति सफल साबित हुई, क्योंकि इससे ट्रंप को अपना रुख बदलने पर मजबूर होना पड़ा। पिछले वर्ष सितंबर में प्रधानमंत्री मोदी, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीनी नेता शी जिनपिंग के बीच बनी निकटता ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विशेष ध्यान आकर्षित किया था। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए ट्रंप ने टिप्पणी की थी, लगता है हमने भारत और रूस को चीन की गहराइयों में खो दिया है। हालांकि, ट्रंप ने भी जल्द ही चीन के साथ संबंध सुधारने की दिशा में कदम बढ़ाया, जिस पर अमेरिका ने पहले भारी शुल्क लगाए थे। हाल में दक्षिण कोरिया में हुई मुलाकात के दौरान दोनों देशों के नेताओं के बीच हाथ मिलाना, मुस्कानें और धीमी बातचीत देखने को मिली, इस बैठक को ट्रंप ने रिपोर्टों के अनुसार 12 में से 12 अंक वाला बताया था। इसी पृष्ठभूमि में भारत को भी ट्रंप की ही भाषा में कहें तो 12 में से 12 अंक वाले दोस्ताना रिश्तों की जरूरत है। इसी संदर्भ में भारत और मोरक्को के बीच बढ़ते संबंध महत्वपूर्ण हैं। भारत और मोरक्को की साझेदारी रक्षा और सैन्य सहयोग, खाद्य और स्वास्थ्य सुरक्षा, ऊर्जा रूपांतरण और स्थायित्व जैसे कई अहम क्षेत्रों तक फैली हुई है। दोनों देश नवीकरणीय ऊर्जा को प्राथमिकता देते हैं -मोरक्को अफ्रीका में हरित ऊर्जा का अग्रणी बनना चाहता है, जबकि भारत वैश्विक स्तर पर अपनी स्थिरता की छाप को मजबूत करने के प्रयास में है। इसके अलावा, दोनों देश संयुक्त सैन्य अभ्यास और खुफिया जानकारी साझा करने जैसे प्रयासों के माध्यम से क्षेत्रीय सुरक्षा को सुदृढ़ कर रहे हैं तथा आतंकवाद जैसी साझा चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग बढ़ा रहे हैं। इसलिए जब भारत में मोरक्को के राजदूत मोहम्मद मलिकी भारत-मोरक्को द्विपक्षीय संबंधों को लेकर उत्साहित नजर आते हैं, तो यह स्वाभाविक है। उन्होंने एक साक्षात्कार में कहा, भारत हमारा रणनीतिक साझेदार है, और मेरा मानना है कि खाद्य एवं स्वास्थ्य सुरक्षा ऐसे क्षेत्र हैं जिनमें हम बहुत निकटता से मिलकर कार्य कर सकते हैं। हमारे बीच संबंध वास्तव में उससे कहीं अधिक गहरे हैं, जितना लोग समझते हैं। इसके अलावा, आतंकवाद-रोधी सहयोग, समुद्री सुरक्षा और साइबर सुरक्षा जैसे संवेदनशील विषयों पर भी हमारे बीच मजबूत साझेदारी है। इन सभी क्षेत्रों में दोनों देशों की ओर से दृढ़ इच्छाशक्ति दिखाई देती है, और मुझे विश्वास है कि हम रक्षा और औषधि उद्योग जैसे क्षेत्रों में भी उत्कृष्ट प्रगति कर सकते हैं। कई राजनयिकों के विपरीत, मोहम्मद मलिकी अपने शब्दों को नापतोल कर नहीं बोलते, वे बेबाक, स्पष्ट और जीवन के हर पहलू का पूरे उत्साह से आनंद लेने वाले व्यक्ति हैं। राजनयिक होने के साथ-साथ लेखक भी, मलिकी एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं, उन गिने-चुने लोगों में से एक, जिन्होंने शक्ति और जीवन के दबावों के बीच संतुलन साधने की कला विकसित की है, चाहे वह उनके राजनयिक जीवन से पहले हो या बाद में। भारत से इतर, उनकी बातचीत कई विषयों को छूती है। कराची में हुए बम विस्फोट से लेकर राजनीतिज्ञ शशि थरूर और उद्योगपति रतन टाटा तक, जिन्हें वे कई भारतीयों के लिए देवता समान मानते हैं। वे अपने छात्र जीवन को याद भी साझा करते हैं, जब उन्होंने आइसक्रीम बेचकर पैसे कमाए। भारत में रहकर उन्होंने एक दिलचस्प बात सीखी कि भारतीयों को खाने पर बुलाइए, लेकिन कभी मंगलवार को नहीं। अपने व्यक्तित्व को आकार देने वाले वर्षों में उन पर सबसे बड़ा प्रभाव उनके पिता का रहा, जिन्हें वे अपने समय से आगे का व्यक्ति बताते हैं। जहां उनकी मां सामान्य माताओं की तरह संरक्षण देने वाली थीं, वहीं पिता ने उन्हें अनुशासन सिखाया कि कभी-कभी ज्यादा कठोर, लेकिन अब पीछे मुड़कर देखता हूं तो वही सबसे सही तरीका था, वे कहते हैं। पैसे को लेकर मलिकी का दृष्टिकोण भी अनोखा है, मैं यह नहीं पूछता कि हमारे पास खर्च करने के लिए पैसा है या नहीं। अगर मुझे किसी कार्य की उपयोगिता पर विश्वास है, तो मैं पहले निर्णय लेता हूं और फिर उसके लिए जरूरी धन की व्यवस्था करता हूं। आम तौर पर लोग पहले बजट देखते हैं, फिर काम शुरू करते हैं, लेकिन मेरा तरीका उल्टा है। पहले काम शुरू कीजिए, पैसा अपने आप निकल आता है। यही कारण है कि अंततः आप अपेक्षा से अधिक कार्य कर पाते हैं, क्योंकि सीमाओं से बंधे नहीं होते। यह सिद्धांत उन्होंने राजदूत रहते हुए भी अपनाया और छात्र जीवन में भी।

विश्वविद्यालय के दूसरे वर्ष के बाद मैंने माता-पिता से एक पैसा भी नहीं लिया, वे बताते हैं। गर्मियों की छुट्टियों में मैं फ्रांस जाता था, समुद्र तटों का आनंद लेता और साथ में आइसक्रीम बेचता था। आइसक्रीम खुद बनाता था और हर बार अच्छी कमाई करके लौटता था। वे हंसते हुए जोड़ते हैं, शुरुआत में मैंने पिता से उधार लिया था, लेकिन बाद में उन्हें उसकी दुगुनी-तिगुनी रकम लौटा दी। उनकी सफलता का रहस्य क्या था? जब बाकी विक्रेता दोपहर में आराम करने चले जाते थे, मैं धूप में बेचने निकल जाता था। मैं न तो ज्यादा चालाक था, न ही होशियार। बस मोरक्को से आया था और सूरज की आदत थी। दोपहर के एक से तीन बजे के बीच बाकी सब चले जाते और मैं उस वक्त दोगुनी बिक्री कर लेता। मैंने समुद्र तट पर बच्चों से भी दोस्ती कर ली थी। वे अपने माता-पिता से कहते कि हम मोहम्मद से ही आइसक्रीम लेंगे। इस तरह मुझे अक्सर अतिरिक्त इनाम भी मिलते। उन्होंने आइसक्रीम बनाना भी एक रेसिपी बुक से सीखा, जिसने उनकी कमाई और बढ़ा दी।

जब मैं मोरक्को लौटता था, तब मेरे पास इतना पैसा होता कि एक नहीं, कभी-कभी दो साल तक भी आराम से गुजारा हो जाता, वे मुस्कुराते हुए याद करते हैं। गंभीरता से बात करें तो मलिकी दोस्ती में गहरा विश्वास रखते हैं। वे कहते हैं, मैं हर दिन इसे जीता हूं, हर दिन इसे देखता हूं, और अपनी मित्रताओं को सहेजता और महत्व देता हूं। लेखक होने के नाते दर्शनशास्त्र उनके जीवन, समय और कार्यों में गहराई से रचा-बसा है। मैं कौन हूं? मैं कहां से आया हूं? पीछा क्या है? ये वे प्रश्न हैं, जिनका उत्तर उन्होंने अपनी आगामी पुस्तक में खोजने का प्रयास किया है। वे बताते हैं, यह एक परंपरागत आत्मकथा नहीं, बल्कि एक गैर-परंपरावादी आत्मकथा है, जिसमें उन घटनाओं का उल्लेख है जिन्होंने मुझे गहराई से प्रभावित किया।

जनादेश की पहली 'किश्त'

बिहार में पहले चरण के दौरान 121 सीटों पर हुए शानदार 64.46 फीसदी मतदान से यह तय हो गया है कि मतदाताओं ने राज्य में स्थायी व टिकाऊ सरकार बनाने का मन बना लिया है। बेशक अभी दूसरे चरण का मतदान 11 नवम्बर को होना बाकी है मगर पहले चरण से यह स्पष्ट हो गया है कि बिहारी मतदाता उत्तेजित हैं और वह हर हाल में निर्णायक फैसला करना चाहता है। मतदान का पहला चरण कांग्रेस नेता श्री राहुल के वोट चोरी के गंभीर आरोपों के साये में सम्पन्न हुआ है। इसका असर बिहार के मतदाताओं पर किस रूप में पड़ेगा इसका पता 14 नवम्बर को ही चलेगा जिस दिन मतगणना होगी। राहुल गांधी के आरोपों का देश के चुनाव आयोग से सीधा लेना- देना तो है ही साथ ही पूरे भारत के समस्त मतदाताओं से भी लेना-देना है क्योंकि भारत की जनता को वोट देने का अधिकार लम्बे संघर्ष के बाद मिला है। इस अधिकार को पाने के लिए राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अंग्रेजों के खिलाफ कड़ा संघर्ष किया था। बापू का संघर्ष केवल अंग्रेजी राज से मुक्ति पाने का ही नहीं था बल्कि भारत के आम व दबे-कुचले लोगों में आत्मसम्मान का भाव जगाने के लिए भी था।

यह सम्मान भारत का नागरिक तभी प्राप्त कर सकता था जब वह राजनैतिक रूप से पूर्णस्वतन्त्र हो जाये। अतः भारत के संविधान ने इस एक वोट के अधिकार को सभी भारतवासियों को एक समान रूप से दिया जिससे स्वतन्त्र भारत का हर नागरिक स्वयंभू बन सके और अपनी मनपसन्द सरकार का गठन कर सके। भारत पूरे विश्व में सर्वाधिक विविधताओं वाला देश है अतः इस विविधता में एकता के भाव को जोड़ने के लिए समस्त वयस्क लोगों को एक वोट का अधिकार बिना किसी पूर्वाग्रह के दिया गया। ये पूर्वाग्रह जाति धर्म व स्त्री-पुरुष भेद के हो सकते थे। इसलिए हर चुनाव में हमें एक वोट की कीमत का अन्दाजा होता है क्योंकि अन्त में लोकतन्त्र का भाग्य विधाता आम आदमी ही होता है। यह प्रसन्नता की बात है कि बिहार विधानसभा के चुनावों में बिहार के आम आदमी के कष्टों का विमर्श ही सतह पर इस प्रकार तैर रहा है कि प्रत्येक राजनैतिक दल को उसका संज्ञान लेना पड़ रहा है। यदि चुनाव में विशुद्ध लफ्फाजी की जगह शिक्षा, स्वास्थ्य व पलायन के मुद्दों पर हर राजनैतिक दल को बात करनी पड़ रही है तो इसे हम लोकतन्त्र की विजय ही कहेंगे क्योंकि अक्सर चुनाव के मौके पर ऐसे मुद्दे हवा में तैरा दिये जाते हैं जिनका आम आदमी की समस्याओं से प्रत्यक्ष लेना-देना नहीं होता। अतः चुनावों में पढ़ाई, दवाई और कमाई की बात अगर विपक्षी नेता तेजस्वी यादव कर रहे हैं तो दूसरी तरफ सत्तारूढ़ गठबन्धन राजग की ओर से स्वयं प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी भी कर रहे हैं। यह बिहार के सजग व बुद्धिमान मतदाताओं के लिए एक सौगात की तरह है। अब देखना केवल यह है कि जमीन पर मतदाता इसे किस प्रकार लेते हैं। बिहार में दो गठबन्धनों के बीच ही मुख्य संघर्ष है जो राजग (भाजपा समाहित) व महागठबन्धन (कांग्रेस समाहित) के बीच ही है। इसलिए 14 नवम्बर को हमें देखने को मिल सकता है कि जनता ने किसी एक गठबन्धन को अपना पूरा प्यार व स्नेह दिया है। मैं यहां किसी की हार-जीत की घोषणा नहीं कर रहा हूं बल्कि यह बता रहा हूं कि बढ़े हुए मतदान प्रतिशत का क्या अर्थ निकाला जा सकता है। पिछले वर्षों में जिस राज्य में भी चुनाव हुए हैं वहां जनता ने निर्णायक मत दिया है मगर इसमें एक पेंच भी है कि अधिसंख्य विधानसभा सीटों पर बहुत कम मतों से ही हार-जीत का फैसला हुआ है। उदाहरण के लिए हरियाणा जैसे राज्य में केवल 22 हजार मतों के कुल अन्तर से ही भाजपा पुनः गद्दी पर आसीन हुई। इससे पूर्व स्वयं बिहार में ही 2020 के चुनावों में केवल 12 हजार मतों का अन्तर रहा था और वहां भाजपा बड़े आराम से बहुमत प्राप्त कर गई थी। इसी से हम अन्दाजा लगा सकते हैं कि लोकतन्त्र में एक वोट की कीमत कितनी हो सकती है? बिहार को हम अन्य राज्यों के बराबर भी रख कर नहीं देख सकते हैं क्योंकि इस राज्य के इतिहास में ही भारत की गौरव गाथा छिपी पड़ी है। यह और बात है कि वर्तमान समय में यह राज्य देश के सबसे गरीब राज्यों में गिना जाता है। अतः राजनैतिक दलों का यह कर्तव्य बनता है कि वे इस धरोहर का सम्मान करें और यहां की राजनीति को नये आयाम दें। परन्तु हम देख रहे हैं कि राजनीतिज्ञों की भाषा लगातार गिरती जा रही है और कभी-कभी तो यह सड़क छाप तक की श्रेणी में आ जाती है। आज जो मतदान हुआ है उसमें राज्य की नीतीश सरकार के 16 मन्त्रियों का भाग्य ईवीएम मशीनों में बन्द हो जायेगा। इसके अलावा विपक्षी नेता तेजस्वी यादव का भी भाग्य आम जनता ईवीएम मशीन में कैद कर देगी। पहले चरण के मतदान का सन्देश अगर कोई निकाला जा सकता है तो वह यही है कि राज्य की जनता अपने अधिकारों के प्रति बहुत सजग है । ध्यान देने वाली बात यह भी है कि यह मतदान चुनाव आयोग द्वारा बिहार में विशेष मतदाता सूची संशोधन के बाद हो रहा है जिसमें लाखों की संख्या में बिहारी मतदाताओं के नाम काटे गये हैं। इसका क्या असर बिहार की राजनीति पर पड़ता है, यह भी देखने वाली बात होगी। देखने वाली बात तो यह भी होगी कि राष्ट्रीय जनता दल के अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव के 1990 से 2005 तक के शासन को भाजपा व इसके सहयोगी दल जिस प्रकार जंगलराज बता रहे हैं, उसका असर बिहार की जनता पर किस तरह पड़ता है मगर इतना निश्चित माना जा रहा है कि बिहार की युवा पीढ़ी इस समय आक्रोश में है और वह दोनों ओर के राजनेताओं के वक्तव्यों को बड़े गौर से सुन रही है।

आखिर एक-दूसरे पर क्यों शक करते हैं पति-पत्नी

देश में पति-पत्नी के आपसी मतभेद या किसी एक साथी के अफेयर के कारण तलाक के मामलों की संख्या लगातार बढ़ रही है। लेकिन हाल ही में केरल हाईकोर्ट ने एक ऐसा फैसला सुनाया है जिसने वैवाहिक रिश्तों को लेकर नई बहस छेड़ दी है। अदालत ने कहा है कि अगर पति अपनी पत्नी पर लगातार शक करता है, उसकी आजादी में हस्तक्षेप करता है या उसकी गतिविधियों पर नजर रखता है तो यह गंभीर मानसिक क्रूरता के दायरे में आता है। आखिरकार पति पत्नियों पर क्यों शक करते हैं? इसके मनोवैज्ञानिक कारण हैं। कई बार ऐसा देखा जाता है कि शक की वजह से रिश्तों में कड़वाहट आने लगती है। मनोचिकित्सकों का मानना है कि किसी पर शक करना, चाहे कोई बहुत बड़ी समस्या न हो, पर यह किसी समस्या की ओर पहली सीढ़ी जरूर है। चार बड़े कारण हैं जिसकी वजह से पति पत्नियों पर शक करते हैं। सबसे पहले अगर पत्नी पति से कम बात करती है और दूसरे लोगों से बात करते हुए नहीं थकती तो यह पुरुषों के मन में शक पैदा कर देता है। वह किसी को वह बातें बताना पसंद नहीं करते हैं और मन में ही बात रखने की वजह से उनका शक बढ़ता चला जाता है। अक्सर देखा जाता है कि पुरुष अपनी पार्टनर को किसी दूसरे पुरुष के साथ देखकर जलन महसूस करने लगते हैं। उनकी असुरक्षा की भावना की हद तो तब पार हो जाती है जब वह अपनी पत्नी के मुंह से दूसरे पुरुष की तारीफ सुनते हैं। यही कारण है कि शादीशुदा महिलाओं को आज भी पुरुष दोस्त होने पर कई तरह से सामाजिक ताने सुनने पड़ते हैं। तीसरा बिन्दु यह है कि अगर कोई महिला हर समय मोबाइल पर लगी रहती है तो यह किसी भी पति के मन में शक पैदा कर सकता है। पुरुषों का मानना है कि जब उनकी पत्नी चुपचाप मोबाइल पर ज्यादा वक्त बिताती है तो उन्हें शक होता है, फिर चाहे वह फोन पर कोई गेम ही क्यों न खेल रही हो या फिर वह फोन पर अपना काम कर रही हो। शादी के बाद पत्नी अपने एक्स से दोस्ती का रिश्ता बरकरार रखती है तो पति को यह पसंद नहीं आता है। भले ही वह अपने चेहरे पर इस बात को जाहिर न होने दे लेकिन मन ही मन पत्नी को पुराने प्रेमी के साथ देखकर बहुत बुरा फील करता है। ऐसे में शक घर कर जाता है। इसी तरह से कुछ पत्नियां भी पति पर शक करती हैं इसके कई कारण देखे जा रहे हैं जोकि मानसिक क्रूरता को जन्म देते हैं। जैसे कि पति जब काम से थक-हारकर आने के बाद भी मोबाइल पर चैटिंग करने में लगे रहते हैं तो पत्नियों को शक होने लगता है। जाहिर है कि यह वह समय होता है जब पत्नी पति के साथ प्यार के कुछ पल बिताना चाहती है और ऐसे में पति का फोन से चिपके रहना पत्नी के शक का कारण बनता है। पतियों को भी बहुत सी दिक्कतें और मानसिक परेशानियां होती हैं। हो सकता है पति अपनी किसी परेशानी के चलते पत्नी से दूरी बना रहे हों लेकिन इस दूरी को पत्नी शक की निगाह से देखने लगती है। पत्नी का मन जरूर कचोटता है पर पति की बेरुखी पत्नी को बेवफाई लगनी शुरू हो जाती है।

न्यूयॉर्क के मेयर भारतीय मूल के ट्रंप विरोधी ममदानी चुने गए-यह भारत के लिए गर्व है या चुनौती या फिर भारतीय राजनीतिक फंडा 'रेवड़ियां बांटो और राज करो' का अमेरिकी संस्करण?

वैश्विक स्तरपर न्यूयॉर्क शहर, जो अमेरिका की आत्मा और लोकतंत्र की जीवंत प्रयोगशाला कहा जाता है,आज 180 से अधिक देशों केप्रवासियों का घर है।भारतीय, पाकिस्तानी, बांग्लादेशी,और अफ्रीकी समुदाय यहाँ एक नई सामाजिक पहचान बना चुके हैं।वहाँ ट्रंप विरोधी भारतीय मूल के जोहरानममदानी का मेयर चुना जाना केवल एक स्थानीय राजनीतिक घटना नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय प्रवासी प्रभाव, राजनीतिक संस्कृति और विचारधारा के वैश्विक प्रसार का संकेत है।यह जीत अमेरिका में दक्षिण एशियाई समुदाय की नई राजनीतिक परिपक्वता को दर्शाती है।लेकिन इस विजय के साथ एक सवाल गूंज रहा है,क्या ममदानी की जीत भारत के लिए गर्व का विषय है या एक ऐसी चुनौती? यहीं पर प्रश्न उठता है,क्या ममदानी की विचारधारा भारत के हितों के साथ हमेशा मेल खाएगी ममदानीडेमोक्रेटिक सोशलिस्ट हैं,जो कई बार अमेरिकी विदेश नीति पर खुलकर आलोचना करते रहे हैं।उन्होंने फिलिस्तीन, कश्मीर, और अल्पसंख्यक अधिकारों पर कई बार भारत की नीतियों की आलोचना की है। यदि वे भविष्य में अपने मेयर पद से ऐसे रुख अपनाते हैं जो भारत की नीतियों से असहमत हों, तो यह भारतीय कूटनीति के लिए असहज स्थिति बन सकती है।भारत के लिए यह जरूरी होगा कि वह भारतीय मूल और भारतीय हित के बीच अंतर को संतुलित रूप से समझे।क्योंकि हर भारतीय मूल का नेता आवश्यक नहीं कि भारत के हितों का प्रतिनिधि हो,वे अपने देश की नीतियों के अनुसार काम करते हैं। दूसरी ओर हमें यह सोचने को मजबूर करती है कि क्या भारतीय राजनीति का रेवड़ी मॉडल अब अमेरिका जैसे लोकतंत्र में भी सफल प्रयोग बन गया है?बीते दो दशकों में अमेरिका में भारतीय मूल के नेताओं का उदय लगातार बढ़ा है।कमला हैरिस उपराष्ट्रपति बनीं, नीरज अंटानी, अजय बंगा और नील कत्याल जैसे नाम अमेरिकी प्रशासन और न्यायिक ढांचे में प्रमुख हुए। लेकिन न्यूयॉर्क जैसे शहर में मेयर पद तक पहुँचना एक अलग ही ऐतिहासिक मुकाम है। ममदानी ने अपने अभियान में समानता, सामाजिक सुरक्षा,और सबके लिए आवास जैसे वादों को केंद्रीय मुद्दा बनाया। उन्होंने खुले तौर पर अश्व-अफ्रीकी-अमेरिकी और प्रवासी समुदायों के हितों की वकालत की। उनके भाषणों और नीतिगत प्रस्तावों में भारत जैसी सामाजिक समानता की मांग झलकती थी। यही कारण है कि कई अमेरिकी विश्लेषक उन्हें भारतीय जन कल्याण मॉडल का अमेरिकी अवतारकह रहे हैं। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह संभावना दर्शा रहा हूं किममदानी की जीत के पीछे को सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि की नजर से देखा जा रहा है,न्यूयॉर्क एक ऐसा शहर है जहाँ जातीय, सांस्कृतिक और आर्थिक विविधता एक साथ धड़कती है। यहाँ गरीबी और महंगाई से जूझता वर्ग न्यायपूर्ण समाज की तलाश में रहता है। ममदानी ने इन्हीं वर्गों को लक्ष्य बनाया उन्होंने कहा कि सरकार का दायित्व केवल कानून- व्यवस्था नहीं, बल्कि नागरिक कल्याण है।यह विचार भारतीय लोकतंत्र के उस विमर्श से जुड़ा है जहाँ सामाजिक कल्याण योजनाएँ (रेवड़ियां) गरीबों को राहत देने के साथ राजनीतिक लोकप्रियता का आधार बनती हैं। ममदानी ने इसी रणनीति को अमेरिकी शहरी परिदृश्य में रूपांतरित किया,जैसे फ्री ट्रांसपोर्ट , हाउसिंग सब्सिडी, और हेल्थ कार्ड जैसी योजनाएँ। आलोचकों के अनुसार, यही रेवड़ी राजनीति का वैश्विक ट्रांसप्लांट है। साथियों बात अगर हम रेवड़ी संस्कृति का अमेरिकी प्रयोग, एक भारतीय राजनीतिक निर्यात को समझने की करें तो,भारतीय राजनीति में रेवड़ी संस्कृति शब्द भारतीय पीएम ने लोकप्रिय किया था, जब उन्होंने मुफ्त सुविधाओं को राजनीतिक प्रलोभन कहा। यह शब्द आज राजनीतिक विमर्श का प्रतीक बन चुका है। लेकिन जोहरान ममदानी की राजनीतिक सफलता ने इस मॉडल को एक नया अंतरराष्ट्रीय संदर्भ दे दिया है।उनकी चुनावी रणनीति में फ्री ट्रांजिट पास, न्यूनतम मजदूरी में वृद्धि, और हाउसिंग क्रेडिट जैसी घोषणाएँ थीं। अमेरिकी मीडिया ने इसे सोशलिस्ट पॉपुलिज्म कहा, जबकि भारतीय सोशल मीडिया ने इसे भारतीय स्टाइल रेवड़ी पॉलिटिक्स की जीत बताया। यह सवाल अब वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन गया है,क्या कल्याण योजनाएँ जनता की वास्तविक जरूरत हैं या लोकतंत्र में जन-समर्थन जुटाने का हथियार? साथियों बात अगर हम भारत के लिए गर्व चुनौती या राजनीतिक प्रतिबिंब का खतरा? भारत के दृष्टिकोण से देखा जाए तो ममदानी की जीत प्रवासी भारतीयों के प्रभावशाली उदय का प्रतीक है। भारतीय मूल का व्यक्ति अमेरिका के सबसे बड़े शहर का मेयर बने,यह न केवल भारतीय लोकतंत्र की बौद्धिक शक्ति का प्रमाण है, बल्कि प्रवासी समुदाय की एकता और नेतृत्व क्षमता का भी।परंतु इसके भीतर छिपा खतरा यह है कि ममदानी डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट हैं,जो कई बार अमेरिकी विदेश नीति पर खुलकर आलोचना करते रहे हैं।उन्होंने फिलिस्तीन, कश्मीर, और अल्पसंख्यक अधिकारों पर कई बार भारत की नीतियों की आलोचना की है,भारत का राजनीतिक फंडा यानी कल्याण योजनाओं के माध्यम से वोट बैंक बनाना, यदि अमेरिकी प्रणाली में भी स्वीकार्यता पा रहा है, तो यह लोकतंत्र के वैश्विक स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण संकेत है।जहाँ भारत में रेवड़ी शब्द को आलोचना के रूप में देखा जाता है,वहीं ममदानी ने इसे सामाजिक न्याय के रूप में पैकेज कर दिया। यह वैचारिक पुनर्परिभाषा भारत के लिए गौरव का भी विषय है कि उसके मॉडल को वैश्विक मंच पर जगह मिली, और चिंता का भी कि क्या लोकतंत्र अब फ्री गिफ्ट पॉलिटिक्स की दिशा में जा रहा है? साथियों बात कर हम ममदानी और ट्रंप विचारधारात्मक टकराव की प्रस्तावना को समझने की करें तो,ट्रंप के दौर में अमेरिकी राजनीति ध्रुवीकरण और राष्ट्रवाद की ओर बढ़ी थी। वहीं ममदानी जैसे नेता उस प्रवृत्ति के विरुद्ध खड़े हैं जो सामाजिक न्याय, अल्पसंख्यक अधिकार और प्रवासियों की आवाज को मुख्यधारा में लाते हैं।ममदानी की नीतियाँ ट्रंप की 'अमेरिका फर्स्ट' नीति के ठीक उलट हैं। वह कम्युनिटी फर्स्ट की बात करते हैं। यह विचारधारा का संघर्ष केवल अमेरिका तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक राजनीति के उस नए दौर को दर्शाता है जहाँ दक्षिण एशियाई सोच और पश्चिमी पूंजीवाद आमने-सामने खड़े हैं।भारत के संदर्भ में, यह स्थिति वैसी ही है जैसे नरेंद्र मोदी की आर्थिक राष्ट्रवाद की नीति के विपरीत, भारतीय राज्यों में समाजवादी मॉडल अपनाने वाले दलों की लोकप्रियता।इस प्रकार, न्यूयॉर्क का चुनाव परिणाम एक वैश्विक वैचारिक मिरर बन गया है। साथियों बात अगर हम डेमोक्रेटिक पार्टीमें नई विचारधारा की बयार को समझने की करें तो, ममदानी का उदय डेमोक्रेटिक पार्टी के अंदर भी एक नई दिशा की ओर संकेत है। एलेक्जेंड्रिया ओकासियो-कोर्टेज और बर्नी सैंडर्स जैसे नेताओं की विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने शहरी समाजवादका नया रूप प्रस्तुत किया।उनकी नीतियों में भारतीय मूल के समाजवादी चिंतन का असर स्पष्ट दिखता है,जहाँ सरकारी कल्याण और जनसहभागिता को समान महत्व दिया जाता है। वे कहते हैं, गरीबी किसी व्यक्ति की असफलता नहीं, बल्कि नीति की असफलता है।यह कथन भारतीय संविधान की समाजवादी मूल भावना से मेल खाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि ममदानी ने भारतीय समाजवाद को अमेरिकी राजनीतिक संदर्भ में पुनर्जीवित किया है। साथियों बात अगर हम भारतीय मीडिया और जनता कीप्रतिक्रिया को समझने की करें तो,भारत में ममदानी की जीत को लेकर दो प्रकार की प्रतिक्रियाएँ आईं। एक ओर उन्हें भारत की सॉफ्ट पावर और बौद्धिक नेतृत्व का प्रतीक बताया गया, तो दूसरी ओर आलोचकों ने कहा कि उन्होंने भारतीय राजनीति की रेवड़ी संस्कृति को अमेरिका में निर्यात कर दिया।भारतीय सोशल मीडिया पर मीम्स और चर्चाओं में कहा गया कि अब न्यूयॉर्क भी दिल्ली हो गया। वहीं कुछ उदारवादी चिंतकों ने इसे समानता के वैश्वीकरण का प्रतीक बताया।यह विभाजन स्वयं भारत की वैचारिक विभाजन रेखाओं को प्रतिबिंबित करता है,जहाँ समाजवादी कल्याण और आर्थिक व्यावहारिकता के बीच संतुलन अब भी एक अत्यंत जटिल सवाल है। साथियों बात अगर हम वैश्विक राजनीति में भारतीय विचारधारा का प्रसार को समझने की करें तो,यदि इस जीत को व्यापक संदर्भ में देखा जाए, तो यह भारतीय राजनीतिक विचारों के वैश्विक प्रसार का संकेत है। भारत ने पिछले दशक में वेलफेयर पॉलिटिक्स को लोकतांत्रिक रूप से वैध बना दिया है। अमेरिका जैसे पूंजीवादी देश में जब वही मॉडल स्वीकार किया जाता है, तो यह दर्शाता है कि वैश्विक अर्थव्यवस्था और समाज दोनों एक संक्रमण काल में है,जहाँ बाजार आधारित शासन से हटकर मानवीय कल्याण आधारित शासन की ओर झुकाव बढ़ रहा है। ममदानी की जीत इस बात की भी पुष्टि करती है कि भारतीय लोकतंत्र केवल सीमाओं के भीतर नहीं, बल्कि एक वैचारिक निर्यात बन चुका है। साथियों बात अगर हम भारत- अमेरिका संबंधों पर संभावित प्रभाव को समझनेकी करें तो, ममदानी केविचार कई बार अमेरिकी विदेश नीति के परंपरागत ढांचे से टकरा सकते हैं। उन्होंने चुनाव अभियान के दौरान गाजा, फिलिस्तीन और शरणार्थी अधिकारों पर प्रखर रुख अपनाया था। यह भारत की मध्य-पूर्व नीति से मेल खाता है लेकिन अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान में नहीं।यदि वे न्यूयॉर्क जैसे वैश्विक वित्तीय केंद्र में प्रभावशाली नीतियाँ लागू करते हैं, तो यह अमेरिका की घरेलू और अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकताओं को भी प्रभावित करेगा।भारत के लिए यह स्थिति अवसर और चुनौती दोनों है,अवसर इसलिए कि एक भारतीय मूल का नेता विश्व मंच पर भारत की बौद्धिक विरासत का विस्तार कर रहा है।

और चुनौती इसलिए कि वह अमेरिकी सत्ता प्रतिष्ठान में एक ऐसी वैचारिक धारा का प्रतिनिधित्व करता है जो भारत की वर्तमान राजनीतिक विचारधारा से भिन्न है। साथियों बातें कर हम रेवड़ी या रिवोल्यूशन दो दृष्टिकोणों का संघर्ष को समझने की करें तो,ममदानी के वादों को लेकर जो विवाद है, वह केवल फ्री गिफ्ट्स की नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक पुनर्संतुलन की बहस है।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने कन्हा ऑफसेट प्रिन्टर्स, ए-9, सराय पीपलथला एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2019/[illegible])

भारतीय हॉकी के 100 वर्ष पूर्ण होने पर मनाया गया जश्न

मुरादाबाद।

भारतीय हॉकी को 100 साल पूरे होने पर शुक्रवार को खेल प्रेमियों ने जश्न मनाया। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश हॉकी संघ के निर्देश अनुसार जिला हॉकी संघ मुरादाबाद द्वारा जीआईसी के मैदान में हॉकी के विशेष मैचों का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि मुरादाबाद मंडल के कमिश्नर आन्जनेय कुमार सिंह और विशिष्ट अतिथि अन्तराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी फ़राज़ खान रहे।

अन्य अतिथियों में 'वाइंट डायरेक्टर ऑफ़ एजुकेशन मनोज कुमार द्विवेदी ,जिला विद्यालय निरीक्षक देवेंद्र कुमार पांडे,बिजनौर टाइम्स के मंडल प्रभारी सुशील कुमार शर्मा आदि रहे। खिलाड़ी एवं अतिथियों को कमिश्नर श्री सिंह द्वारा सम्मानित किया गया जिनमें जिला रामपुर से उस्मान नूर, जिला बिजनौर से सुहेल जफर,जिला संभल से सैयद आसिफ हसन, चंदौसी से रिटायर्ड स्पोर्ट्स ऑफिसर रईस अख्तर , मुरादाबाद से सैयद अबसार अली,सैयद शहजाद अली, महफूज़ खान, 83 वर्षीय बुजुर्ग खिलाड़ी मुन्नन खान शामिल रहे। सभी खिलाड़ी ब'चों को अतिथियों

द्वारा मेडल पहनाये गए तथा उत्तर प्रदेश हॉकी के सचिव द्वारा भेजे गए सर्टिफिकेट भी दिए गए। आयोजन सचिव इकबाल खान ने मण्डलायुक्त को जीआईसी के कंक्रीट मैदान चल रही हॉकी नर्सरी के बारे में विस्तार से बताया कि यहां से एक बच्चा फ़राज़ खान हॉकी सीख कर भारतीय टीम का हिस्सा बन गया यह बात सुनकर नर्सरी में ब'चों की भरमार हो गई। सुविधाओं के अभाव के बावजूद हम लोगों ने हिम्मत नहीं हारी क्योंकि हमारे कोच स्वर्गीय अथर खान ने यह बात कही थी कि एक दिन आएगा जब इस ग्राउंड की दशा बदलेगी । इसी नर्सरी से एक ब'चा अभिषेक शर्मा सीआईएफ में सिलेक्ट हुआ इसी नर्सरी से एक ब'चा भारतीय वायु सेवा में सिलेक्ट हुआ इसी नर्सरी से एक ब'चा शिक्षा विभाग में आज अपनी टीम लेकर आप के सामने खड़ा हुआ है ।

इसी नर्सरी का एक बच्चा फ़राज़ आपके बगल में बैठा है जो भारतीय टीम का खिलाड़ी है। इसी नर्सरी का एक बच्चा राष्ट्रीय खिलाड़ी अखूतब खान इसी समय सोनकपुर स्टेडियम में इसी इवेंट का 100 साला जश्न का उद्घाटन करने गया हुआ है। इस मैदान का ब'चा राष्ट्रीय खिलाड़ी अखत खानब कर रहा है। इसके अलावा इक़बाल खान ने बहुत से एचीवमेंट मण्डलायुक्त के सामने रखे। उन्होंने कहा कि बेशुमार

अचीवमेंट हैं सर हम आपको क्या-क्या बताए बस हमारे पास ग्राउंड नहीं है यदि आप हमें ग्राउंड दे देंगे तो हम आपको इंडिया प्लेयर की भरमार कर देंगे ।

मंडलायुक्त आन्जनेय कुमार सिंह ने कहा कि इतने अ'छे आपकी अचीवमेंट हैं। यहां संसाधनों की कमी के बावजूद ब'चे खेल रहे हैं मैं बहुत खुश हूं। मैं वादा करता हूं इस ग्राउंड की रूपरेखा इसका पूरा नक्शा बदलूंगा।

ऐसी आप मेहनत करें बड़े आदमी बने और देश का नाम रोशन करें उन्होंने आयोजन समिति के तमाम सदस्य से कहा कि मैं सलाम करता हूं आपकी हिम्मत को आप ऐसी जगह से ऐसे ब'चे दे रहे हैं और इतने टैलेंटेड ब'चे हैं ऐतिहासिक जगह है इसको और सुंदर बनाया जाएगा। मैं वादा करता हूं कि आपको बेहतरीन हॉकी का मैदान मिलेगा आप मेहनत करिए देश का नाम रोशन करिए और फ़राज़ की तरह शिखर को चूमिए। देश के लिए मेडल लाइए खूब आगे बढ़िये।

कमिश्नर द्वारा 'वाइंट डायरेक्टर आफ एजुकेशन ,जिला विद्यालय निरीक्षक तथा जीआईसी के प्रिंसिपल बलबीर सिंह,अतहर खान समिति के कोषाध्यक्ष राहत खान को ट्रॉफी दी गयी। जफर अली खान अर्शी पुत्र इम्तियाज अली खान अर्शी संस्थापक रज़ा लाइब्रेरी रामपुर के द्वारा मुख्य

कमिश्नर का वायदा, मुरादाबाद को जल्द मिलेगा बेहतरीन हॉकी ग्राउंड

अतिथि मण्डलायुक्त आंजनेय कुमार सिंह को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। सभी अतिथियों को मफलर जो कि उत्तर प्रदेश होकी द्वारा भेजा गया था गले में डालकर सम्मानित किया गया। आयोजन समिति में महफूज़ खान, पार्षद कमर सलीम,पार्षद मोअज़्ज़म अली, डॉक्टर सुल्तान अहमद, परवेज़ खान वारसी,मास्टर मुबारक हुसैन, फहीम खान, कौसर खान ,सैयद अमन अली, नितिन कुमार सैनी, अब्दुल्ला खान, नवेद आलम, फराज भूरे ,शाने आलम खान , इमरान बेग, मिर्जा सुलेमान बेग, ज़िशनबेग, खालिद खा,हाजी ,मशकूर हसन आदि मौजूद रहे। सभी ब'चों को सर्टिफिकेट तथा मेडल देकर सम्मानित किया गया अंत में जिला सचिव ने सबका आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थियों को समझाईं जियोटेक्निकल एक्सप्लोरेशन की बारीकियां

मुरादाबाद। एआईटी के सिविल इंजीनियरिंग विभाग में जियोटेक्निकल एक्सप्लोरेशन एंड सैंपलिंग टेक्निक्स विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस विशेष कार्यक्रम में मुख्य अतिथि तनवीर अली, डायरेक्टर एलिस कंसल्टेंट एंड इंजीनियरिंग प्रा.लि., ओखला उपस्थित रहे। कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डॉ. रोहित गर्ग एवं विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज चौधरी ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से की गई, जिसके पश्चात मुख्य अतिथि श्री तनवीर अली का स्वागत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डॉ. रोहित गर्ग, विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज चौधरी तथा डॉ. राहुल सिंह ने पुष्पगु'छ भेंट कर किया। कार्यशाला में बहुत से विद्यार्थी सम्मिलित हुए, जो गवर्नमेंट पॉलिटेक्निक कॉलेज मुरादाबाद तथा बिजनौर से आए थे। उनके साथ कई फैकल्टी सदस्य भी उपस्थित रहे। विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज चौधरी कार्यशाला के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात मुख्य अतिथि तनवीर अली ने छात्रों को जियोटेक्निकल एक्सप्लोरेशन और सैंपलिंग तकनीकों के बारे में विस्तार से बताया तथा फील्ड में इनके उपयोग की प्रक्रिया समझाई। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागी छात्रों को निदेशक प्रोफेसर डॉ. रोहित गर्ग के करकमलों द्वारा प्रमाणपत्र प्रदान किए गए। अंत में विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज चौधरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ। विभाग के फैकल्टी में डॉ. सपना कुमारी, चंद्रकांत कुमार, वैभव सक्सेना तथा गैर-शैक्षणिक स्टाफ में अभिनय मिश्रा (लैब सहायक), मोहम्मद वसीम (ऑफिस असिस्टेंट) एवं सचिन कुमार (लैब अटेंडेंट) उपस्थित रहे।

'वंदेमातरम्' गीत में त्याग और समर्पण की भावना निहित: भूपेन्द्र सिंह

मुरादाबाद।

भारतीय जनता पार्टी महानगर के तत्वावधान में भारत के राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम के गौरव पूर्ण 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भव्य उत्सव के रूप में आयोजन किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी शामिल रहे।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी ने कहा कि भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा.राजेंद्र प्रसाद ने 1950 में वन्देमातरम गीत को राष्ट्रीय गीत का दर्जा दिया । भाजपा पूरे प्रदेश में वंदेमातरम वर्षगांठ पर वंदेमातरम सभा एवं गायन का आयोजन कर रही है। कहा कि स्वतंत्रता संग्राम की आत्मा रहे वन्देमातरम गीत अब नवभारत के संकल्प का प्रतीक बन रहा है यह केवल एक गीत ही नहीं है बल्कि भारत

की आत्मा की वह अमर पुकार है जिसने भारत को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त होने की प्रेरणा प्रदान की यह केवल मातृभूमि की स्तुति नहीं है बल्कि इसमें राष्ट्र के प्रति श्रद्धा,त्याग और समर्पण की भावना निहित है यह गीत हमें स्मरण कराता है कि हमारा राष्ट्र केवल सीमाओं से नहीं बल्कि साझा संस्कृति भावनाओं और कर्तव्यबोध से निर्मित हुआ है राष्ट्रीय गीत वन्देमातरम केवल एक गीत ही नहीं है बल्कि भारत की आत्मा की आवाज है यह वह स्वर है जिसने गुलामी की बेड़ियों में जकड़े भारत को आजादी की रह दिखाई जब जब भारत पर संकट आया यह गीत प्रत्येक भारतीय के हृदय में नई ऊर्जा और साहस और एकता का संचार करता रहा। उन्होंने आगे कहा कि आज 7 नवंबर को 18 स्थानों पर 150 कार्यकर्ता सामूहिक वन्देमातरम गायन एवं सभा आयोजित हो रहे हैं। कार्यक्रम में सभी का आभार व्यक्त करते हुए भाजपा महानगर अध्यक्ष गिरीश भंडूला ने कहा कि वन्देमातरम की 150 वीं वर्षगांठ केवल इतिहास का स्मरण नहीं बल्कि राष्ट्र के प्रति समर्पण एकता और कर्तव्यबोध के पुनः जागरण का उत्सव है।

भाजपा कार्यालय में आयोजित हुआ भव्य कार्यक्रम

सड़क दुर्घटना से बचाव के लिए विभाग सजग: उप गन्ना आयुक्त

मुरादाबाद। उप उप गन्ना आयुक्त मुरादाबाद हरपाल सिंह ने बताया कि चालू पेराई सत्र 2025-26 हेतु विभाग सड़क दुर्घटना से जन सामान्य को होने असुविधा को रोकने के लिये पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि वर्तमान मे मौसम मे परिवर्तन होने व ठंड बढने से कोहरा आने के कारण कम दृश्यता होने पर दुर्घटनाओं की सम्भावना बढ जाती है जिनसे बचाव के दृष्टिगत विभाग द्वारा सभी गन्ना ढुलाई वाहनों अनिवार्य रूप रिफ्लेक्टर लगवाये जाने का कार्य कराया जा रहा है। इसी क्रम मे आज धामपुर शुगर मिल में पैराई सत्र के शुभारंभ के अवसर पर उप गन्ना आयुक्त एंव विभागीय निर्देशों के अनुपालन में जिला गन्ना अधिकारी बिजनौर व मिल अधिकारियों के द्वारा सभी गन्ना लदे वाहनों पर रिफ्लेक्टर व लाल कपड़ा लगाने का अभियान की भी शुरुआत की गई जिससे कि सभी किसान भाई व आम जनता को दुर्घटना से बचाया जा सके। उप गन्ना आयुक्त द्वारा बताया गया कि यह अभियान पैराई सत्र के दौरान भी निरन्तर चलता रहेगा।

इस सम्बन्ध मे चीनी मिल धामपुर के प्रबंधतंत्र ने यह अश्वासन भी दिया कि किसी भी गन्ना ढुलाई वाहन को बिना रिफ्लेक्टर के केन यॉर्ड में प्रवेश नहीं दिया जाएगा। उन्होने सभी वाहन चालकों से अपील की है कि वह यातायात के नियमों का पालन करें जिसे स्वयं भी सुरक्षित रहे और आम जनता भी सुरक्षित रहे। उप गन्ना आयुक्त ने जनसुरक्षा के लिये चीनी मिलों से सभी किसानों एवं, वाहन चालकों को निशुल्क रिफ्लेक्टर उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिये।

भारतीय हाकी के शताब्दी वर्ष पूर्ण होने पर मैच का हुआ आयोजन

सिद्दीकपुर, जौनपुर।

खेल मंत्रालय भारत सरकार एवं खेल निदेशालय उत्तर प्रदेश लखनऊ से प्राप्त निर्देश के क्रम में इन्दिरा गांधी स्पोर्ट्स स्टेडियम सिद्दीकपुर में भारतीय हॉकी को 7 नवम्बर 1925 को अंतर्राष्ट्रीय हॉकी संघ (फ्रढ्ढ॥) से जुड़ने के शताब्दी वर्ष एवं विगत में हॉकी के गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास पर बालक एवं बालिका हॉकी प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। यह आयोजन हॉकी इण्डिया एवं यू0पी0 हॉकी के संयुक्त तत्वावधान में प्रदेश के 75 जनपदों में आयोजित हुआ। हॉकी के गौरवशाली इतिहास की स्मृति में इन्दिरा गांधी स्टेडियम में 'इण्डियन हॉकी के 100 वर्ष' के रूप में मनाते हुए हॉकी का मैच किया गया। उक्त मैच के मुख्य

अतिथि श्याम बाबू यादव जिला पंचायत सदस्य के साथ जनपद के हॉकी के वरिष्ठ राष्ट्रीय खिलाड़ी रूद्र प्रताप सिंह भी उपस्थित थे जिन्हें क्रीड़ा अधिकारी चन्दन सिंह ने अंगवस्त्रम प्रदान करते हुये माल्यार्पण करके स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने हॉकी के गौरवशाली इतिहास को रेखांकित करते हुये खिलाड़ियों को खेल से जुड़ने एवं कैरियर के रूप में अपनाने पर बल दिया गया।

अतिथिद्वय ने हॉकी मैच में उपस्थित टीमों से परिचय प्राप्त करने के पश्चात हॉकी बाल को स्टीक से मारकर हॉकी प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस अवसर पर जौनपुर के सचिव सुधान्शु गुप्ता, हॉकी प्रशिक्षक मो0 इजहार आदि उपस्थित थे जिनका जनपद के प्रशिक्षकों द्वारा माल्यार्पण करके स्वागत किया गया। मैच में बालक वर्ग में इन्दिरा गांधी स्टेडियम की हॉकी टीम ने जनता जनार्दन इण्टर कालेज की टीम को 2-0 से पराजित किया। बालिका वर्ग में के0के0 स्पोर्ट्स क्लब की हॉकी टीम ने एस0एस0 पब्लिक स्कूल की टीम को 3-1 से पराजित किया। मैच में कन्हैया सिंह यादव कबड्डी प्रशिक्षक, कृष्ण कुमार यादव एथलेटिक्स प्रशिक्षक, शशि यादव बॉक्सिंग प्रशिक्षक, दिलीप कुमार वॉलीबाल प्रशिक्षक एवं निलेश यादव हैण्डबाल प्रशिक्षक उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन कन्हैया सिंह यादव ने किया। अन्त में क्रीड़ा अधिकारी ने उपस्थित अतिथियों एवं खिलाड़ियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

यज्ञ के साथ हुई हीरक जयंती समारोह की शुरूआत

मुरादाबाद। आर्य समाज मंदिर रेलवे हरथला कॉलोनी मुरादाबाद में आयोजित वार्षिकोत्सव हीरक जयंती समारोह के रूप में सर्वप्रथम प्रथम दिवस की प्रथम बेला की शुरुआत यज्ञ के माध्यम से की गई यज्ञ के मुख्य यजमान के रूप में अभय कुमार सिंह एडवोकेट पूर्व महासचिव बार एसोसिएशन का परिवार रहा तथा यज्ञ के ब्रह्मा पंडित सुरेश शास्त्री हिमाचल प्रदेश ने वैदिक मंत्रों से यज्ञ संपन्न कराया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से विभिन्न विद्यालयों से आए विद्यार्थियों की प्रतियोगिता रही जिसमें छात्र-छात्राओं द्वारा मंत्र एवं भाषण के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मंत्र प्रतियोगिता में खुशबू, विद्यांशी, आकृति ने अपना प्रथम स्थान बनाया भजन प्रतियोगिता में वर्तिका वर्मा, कनिष्का, मोनिका प्रथम रही तथा भाषण प्रतियोगिता में ऋतिज्ञा यादव ,अर्पित सिंह, तनु गोले ने अपना उत्तम प्रदर्शन कर स्थान बनाया ब'चों की प्रतिभा का प्रदर्शन का यही उचित माध्यम है जिससे आर्य समाजो द्वारा समय-समय पर इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करता रहता है आज समाज में इसकी अहम भूमिका होती जा रही है आज हमें अपनी आने वाली पीढ़ी को बचाना है तो आर्य समाज को अपनाना ही होगा जिससे आने वाली पीढ़ी जागरूक हो सके। फरीदाबाद हरियाणा से पधारे पंडित प्रदीप शास्त्री ने अपने भजनों के माध्यम से सभी को उत्प्रोत कर दिया और अपनी मधुर वाणी से समाज को जागरूक करने का अपने भजनों के माध्यम से कैसे आज की युवा पीढ़ी को अच्छे मार्ग पर चलाया जाए।

..पाखंडी राष्ट्रवाद के लिए वंदे मातरम की वर्षगांठ का दुरुपयोग कर रही बीजेपी, कांग्रेस ने बोला हमला

नई दिल्ली। महाराष्ट्र कांग्रेस ने भाजपा पर आरोप लगाया है कि वह राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ का इस्तेमाल राजनीतिक ध्रुवीकरण और दिखावटी राष्ट्रवाद फैलाने के लिए कर रही है। कांग्रेस प्रवक्ता सचिन सावंत ने कहा कि भाजपा झूठ प्रचार कर रही है कि कांग्रेस के कुछ मुस्लिम विधायक वंदे मातरम का विरोध कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि कांग्रेस विधायक असलम शेख और अमीन पटेल दोनों ने साफ कहा है कि उन्हें गीत से कोई आपत्ति नहीं है। सचिन सावंत ने कहा, अगर भाजपा नेता वंदे मातरम गाना चाहते हैं, तो वे हमारे दफ्तर के अंदर आकर गाएं, बाहर तमाशा न करें। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि भाजपा जानबूझकर मुस्लिम विधायकों को निशाना बना रही है ताकि समाज में धार्मिक तनाव पैदा किया जा सके। सचिन सावंत ने कहा, यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भाजपा राष्ट्रीय गौरव से जुड़े गीत को भी सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश कर रही है। इससे उसकी विभाजनकारी राजनीति उजागर होती है। उन्होंने कहा कि वंदे मातरम कांग्रेस की आत्मा का हिस्सा है। जब हमारे स्वतंत्रता सेनानी इसे ब्रिटिश राज के खिलाफ गा रहे थे, तब आरएसएस का अस्तित्व भी नहीं था। जो लोग कभी संविधान का विरोध करते थे, जिन्होंने 52 साल तक तिरंगा नहीं फहराया, वे आज खुद को देशभक्त कह रहे हैं। सचिन सावंत ने आगे कहा, वंदे मातरम हमारे लिए त्याग और गर्व का गीत है, लेकिन भाजपा के लिए यह सिर्फ चुनावी नारा बन गया है। वे इसे मंच पर गाते हैं, लेकिन दिल से वे नमस्ते सदा वत्सले जैसे आरएसएस के गीत को पूजते हैं। कांग्रेस विधायक अमीन पटेल ने भी भाजपा के आरोपों को खारिज किया। उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकर्ता उनके कार्यालय के बाहर गीत गाने आ रहे हैं। उन्होंने कहा, मैं उनका स्वागत करने के लिए तैयार हूं। अगर वे मेरे दफ्तर आएंगे, तो मैं उन्हें नाश्ता-पानी भी दूंगा। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा को सिर्फ चुनाव के वक्त ही वंदे मातरम याद आता है। कांग्रेस को देशभक्ति सिखाने की जरूरत नहीं। देशभक्ति हमारे खून में है।

पीएम मोदी के बयान पर संदीप दीक्षित का तंज

वहीं वंदे मातरम से दो छंद हटाने संबंधी पीएम मोदी के बयान पर कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित ने कहा, मुझे नहीं लगता कि उन्हें कुछ समझ में आता है। हमें किसी अज्ञानी व्यक्ति को जवाब भी नहीं देना चाहिए। हमारा राष्ट्रगान जन गण मन गाया है। क्या वह छोटा किया गया है या पूरा गाया गया है? केवल कुछ छंद गाए गए हैं... आनंदमठ कविता में, संन्यासी और फकीर विद्रोह एक ऐतिहासिक घटना थी, और इसमें कुछ भी सांप्रदायिक नहीं था... आनंदमठ पुस्तक ने पूरी घटना को कुछ हद तक सांप्रदायिक बना दिया; साधुओं और फकीरों का विद्रोह... और हिंदू-मुस्लिम विभाजन की बात की। यह एक उपन्यास था... कुछ अंश ऐसे हैं जो कभी-कभी एक समुदाय के बारे में सवाल उठाते प्रतीत होते हैं...

1937 में वंदे मातरम् के टुकड़े हुए : मोदी

***इस गीत का एक हिस्सा हटा दिया गया, इसी विभाजन ने बंटवारे का बीज बोया**

नई दिल्ली।

कांग्रेस पर एक स्पष्ट हमले में, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को कहा कि 1937 में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के महत्वपूर्ण छंदों को हटा दिया गया था, जिससे विभाजन के बीज बोए गए और इस तरह की विभाजनकारी मानसिकता आज भी देश के लिए एक चुनौती है। मोदी ने यह टिप्पणी राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित एक साल तक चलने वाले स्मरणोत्सव का उद्घाटन करते हुए की। मोदी ने इस अवसर पर इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया। वंदे मातरम भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आवाज बन गया, इसने प्रत्येक भारतीय की भावनाओं को व्यक्त किया। नरेंद्र मोदी ने साफ शब्दों में कहा कि 1937 में, 'वंदे मातरम' के महत्वपूर्ण पदों, उसकी आत्मा के एक हिस्से को अलग कर दिया गया था।

'वंदे मातरम' को तोड़ दिया गया था। वंदे मातरम के इस विभाजन ने, देश के विभाजन के भी बीज बो दिए थे। राष्ट्र-निर्माण के इस महामंत्र के साथ यह अन्याय क्यों हुआ, यह आज की पीढ़ी को जानना जरूरी है। क्योंकि वही विभाजनकारी सोच आज भी देश के लिए एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। मोदी ने कहा कि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने एक बार कहा था कि बंकिमचंद्र की 'आनंदमठ' सिर्फ एक उपन्यास नहीं है, यह स्वाधीन भारत का एक स्वप्न है।

'आनंदमठ' में 'वंदे मातरम' का प्रसंग, उसकी हर पंक्ति, बंकिम बाबू के हर शब्द और हर भाव, सभी के अपने गहरे निहितार्थ थे, और आज भी हैं। इस गीत की रचना गुलामी के कालखंड में हुई, लेकिन इसके शब्द कभी भी गुलामी के साए में कैद नहीं रहे। वे गुलामी की स्मृतियों से सदा आजाद रहे। इसी कारण 'वंदे मातरम' हर दौर में, हर काल में प्रासंगिक है। इसने अमरता को प्राप्त किया है। वंदे मातरम की प्रासंगिकता को हर युग में रेखांकित करते हुए, प्रधानमंत्री ने ऑपरेशन सिंदूर का स्पष्ट संदर्भ देते हुए कहा, जब दुश्मन ने आतंकवाद का इस्तेमाल करके हमारी सुरक्षा और सम्मान पर हमला करने का दुस्साहस किया, तो दुनिया ने देखा कि भारत दुर्गा का रूप धारण करना जानता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि आज जब देश वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे कर रहा है, यह हमें नई प्रेरणा देता है और देशवासियों को नई ऊर्जा से भर देता है। वंदे मातरम एक शब्द है, एक मंत्र है, एक ऊर्जा है, एक स्वप्न है, एक संकल्प है। यह भारत माता के प्रति समर्पण है, भारत माता की आराधना है। यह हमें हमारे इतिहास से जोड़ता है और हमारे भविष्य को नया साहस देता है।

वंदे मातरम के 150 वर्ष : पीएम मोदी ने स्मरणोत्सव का किया शुभारंभ; स्मृति डाक टिकट और सिक्का भी किया जारी

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित वर्ष भर चलने वाले स्मरणोत्सव का शुभारंभ किया है। इस कड़ी में प्रधानमंत्री मोदी इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में शामिल हुए। प्रधानमंत्री ने इस अवसर पर एक स्मारक डाक टिकट और सिक्का भी जारी किया है। यह कार्यक्रम 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक चलने वाले एक साल के राष्ट्रव्यापी स्मरणोत्सव का औपचारिक शुभारंभ है। इस राष्ट्रव्यापी स्मरणोत्सव का उद्देश्य भारत के स्वतंत्रता संग्राम को प्रेरणा देने वाले गीत वंदे मातरम के महत्व को नई पीढ़ी तक पहुंचाना है।

बिहार को कट्टा सरकार नहीं चाहिए... पीएम मोदी ने औरंगाबाद की रैली में आरजेडी पर किया वार

औरंगाबाद। चुनाव प्रचार के लिए पीएम मोदी आज बिहार के औरंगाबाद पहुंचे. एक जनसभा को संबोधित करते हुए कहा पीएम मोदी ने आरजेडी पर जमकर निशाना साधा. उन्होंने कहा कि कांग्रेस को भी आरजेडी के वादों पर भरोसा नहीं है, इसलिए वह आरजेडी के घोषणापत्र की बात भी नहीं करती. बिहार की जनता और युवाओं ने भी आरजेडी के झूठ के पिटारे को खारिज कर दिया है. पीएम मोदी ने आरजेडी पर निशाना साधते हुए कहा कि जंगलराज वाले पहले से ही बच्चों को रंगदार बनाने की बात कर रहे हैं, वो खुलेआम ऐसा कर रहे हैं. ये लोग खुलेआम ऐलान कर रहे हैं कि अगर भैया की सरकार आई तो कट्टा, दुनाली, फिरौती, रंगदारी, यही सब चलेगा. बिहार को कट्टा सरकार नहीं चाहिए, बिहार को कुशासन वाली सरकार नहीं चाहिए. पीएम मोदी ने आरजेडी पर निशाना साधते हुए कहा कि ये लोग नौकरी के बदले जमीन लिखवाते थे. हमने बिहार में 60 लाख गरीबों को पक्का आवास दिया. कांग्रेस पर हमलावर पीएम मोदी ने कहा कि आप याद रखिए जब आपने नीतीश कुमार को यहां मौका दिया, उनके कार्यकाल के शुरुआती 9 साल दिल्ली में आरजेडी और कांग्रेस की सरकार थी. दिल्ली में बैठे इन लोगों ने दिन-रात एक ही काम किया. उन्होंने लगातार बिहार के विकास में बाधा डाली और नीतीश कुमार को काम करने से रोका. 2014 में जब बिहार में पहली बार डबल इंजन की सरकार बनी, तो हमने बिहार के विकास के लिए तीन गुना ज्यादा पैसा दिया. जनसभा को संबोधित करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि पिछले कुछ सालों में बिहार में लाखों भर्तियां हुई हैं,ये भर्तियां पूरी ईमानदारी से की गई हैं. जबकि आरजेडी-कांग्रेस का ट्रैक रिकॉर्ड आपके सामने है, ये वो लोग हैं जो नौकरी के बदले जमीन अपने नाम करवा लेते हैं, ये खेल खेला गया. कोर्ट ने भी माना और आज ये जमानत पर बाहर हैं. ये जंगलराज के लोग जमानत पर बाहर हैं, ये आरजेडी-कांग्रेस के लोग बिहार के युवाओं को कभी नौकरी नहीं दे सकते.

पहले बूथ लूटे जाते थे, गोलियां चलती थीं

पीएम मोदी ने पहले चरण में हुई बंपर वोटिंग पर कहा कि कल हमने जंगलराज और सुशासन के बीच का अंतर देखा. बिहार के दलित, महादलित, पिछड़े और अति पिछड़े सभी ने बिना किसी रोक-टोक के वोट डाला, जबकि हमने जंगलराज का वो दौर भी देखा है जब बूथ लूटे जाते थे, वोटिंग के दिन गोलियां चलती थीं, खून की नदियां बहाई जाती थीं. जंगलराज के गुर्गे आज भी खूब साजिशें रच रहे हैं, लेकिन मैं चुनाव आयोग को पहले चरण का चुनाव इतने अच्छे ढंग से कराने के लिए बधाई देना चाहता हूं.

चुनावी पारदर्शिता पर सुप्रीम सख्ती, नामांकन पत्र में सजा छिपाने पर अमान्य होगा चुनाव

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने नामांकन पत्र में दोषसिद्धि को लेकर ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। शीर्ष अदालत ने शुक्रवार को कहा कि नामांकन पत्र में पिछली सजा का खुलासा न करने पर निर्वाचित उम्मीदवार को अयोग्य माना जाएगा। न्यायमूर्ति पी. एस. नरसिम्हा और न्यायमूर्ति ए. एस. चंदुरकर की पीठ ने पूर्व पार्षद पूनम द्वारा दायर की गई अपील पर यह आदेश दिया है। पार्षद को चुनाव के लिए नामांकन पत्र में एक मामले में अपनी पिछली सजा का खुलासा न करने के की वजह से पद से हटा दिया गया था। पूनम को मध्य प्रदेश के भीकनगांव नगर परिषद में नगर पार्षद पद से हटा दिया गया था। पूनम को चेक बाउंस से जुड़े एक मामले में दोषी ठहराया गया था। जिसमें उन्हें एक साल जेल की सजा सुनाई गई थी। इसके साथ ही मुआवजा देने का निर्देश भी दिया गया था। इस मामले में याचिकाकर्ता की अयोग्यता से बचाने की याचिका को खारिज करते हुए, पीठ ने कहा, जब यह पाया जाता है कि किसी उम्मीदवार द्वारा पिछली दोषसिद्धि का खुलासा नहीं किया गया है, तो यह मतदाता द्वारा अपने मताधिकार के स्वतंत्र प्रयोग में बाधा उत्पन्न करता है। शीर्ष अदालत ने कहा, ये साफ है कि 1881 के अधिनियम की धारा 138 के तहत दोषसिद्धि का खुलासा न करके याचिकाकर्ता ने महत्वपूर्ण जानकारी छिपाई है और इस प्रकार 1994 के नियम 24-ए(1) की अनिवार्य जरूरतों का पालन करने में विफल रहीं। इसलिए उसके नामांकन पत्र को स्वीकार करना सही नहीं है। चूंकि याचिकाकर्ता एक निर्वाचित उम्मीदवार थी, इसलिए उसका चुनाव रद्द कर दिया गया। इस प्रकार यह साफ है कि उसके नामांकन पत्र को इस तरह गलत तरीके से स्वीकार करने के कारण चुनाव पर भौतिक रूप से प्रभाव पड़ा। याचिकाकर्ता का यह तर्क भी विफल है। अपील खारिज कर दी गई।

आजम खान ने की अखिलेश यादव से मुलाकात, मीडिया से बोले- 2027 में आएगी बदलाव की लहर

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आज़म खान लखनऊ में सपा प्रमुख अखिलेश यादव से उनके आवास पर मिले। लगभग 30 मिनट तक चली इस मुलाकात को मौजूदा राजनीतिक माहौल में अहम माना जा रहा है। मुलाकात के बाद, आज़म खान ने कोई विस्तृत जानकारी देने से परहेज किया, लेकिन कहा कि वह अपने, अपने परिवार और समर्थकों के साथ हुए अन्याय की कहानी साझा करने आए थे। आज़म खान ने कहा कि हमने एक-दूसरे से दिल की बात की। जब दो समान विचारधारा वाले राजनेता मिलते है, तो स्वाभाविक रूप से सार्थक चर्चाएं होती हैं। सपा नेता ने कहा कि विपक्ष अक्सर अपने राजनीतिक हितों को साधने वाली टिप्पणियों का सहारा लेता है; हर पार्टी की अपनी विचारधारा और मान्यताएं होती हैं। मैं बस इतना कह सकता हूं कि 2027 में बदलाव की लहर आएगी और मैं उसका हिस्सा बनूंगा। आज़म खान ने अपने और अपने सहयोगियों के साथ हुए व्यवहार को अन्यायपूर्ण बताते हुए कहा- हमारे साथ जो अन्याय हुआ है, उस पर हम आपस में चर्चा करते हैं। मुझे उम्मीद है कि मेरे या किसी और जैसे अन्याय का सामना किसी और को न करना पड़े। हम अदालतों से न्याय और सभी एजेंसियों से निष्पक्षता चाहते हैं। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि उनके, उनके सहयोगियों और विश्वविद्यालय के साथ जो अन्याय हुआ है, वह किसी और के साथ नहीं होना चाहिए। बिहार में चल रहे जंगल राज के मुद्दे पर बोलते हुए, आज़म खान ने सार्वजनिक रूप से बिहार जाने से इनकार कर दिया और कहा, वहाँ जंगल राज की बात हो रही है, लेकिन जंगलों में तो कोई इंसान रहता ही नहीं। मैं वहाँ कैसे जा सकता हूँ? मैं जानबूझकर रेल की पटरियों पर सिर रखने से इनकार कर दूँगा। इस लाक्षणिक अभिव्यक्ति ने वहाँ के हालात के आगे झुकने से उनके इनकार को दर्शाया। अखिलेश यादव ने काव्यात्मक शब्दों में इस मुलाकात के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा, आज जब वे हमारे घर आए तो कितनी सारी यादें ताज़ा हो गईं! यह सभा हमारी साझी विरासत का प्रतीक है। उनके संदेश में पार्टी के भीतर एकता और एकजुटता के महत्व पर ज़ोर दिया गया।

राहुल गांधी बोले- नरेंद्र मोदी ने की चुनाव चोरी, मैं जेन-जेड को सचाई बताऊंगा

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने भाजपा पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि वह जनरेशन जेड और भारत के युवाओं को साबित कर देंगे कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी चुनावों में हेराफेरी करके प्रधानमंत्री बने हैं। उन्होंने कहा कि हमारे पास बहुत सारी सामग्री है; हम इस प्रक्रिया को जारी रखेंगे। हम भारत की जनरेशन जेड और युवाओं को स्पष्ट रूप से दिखा देंगे कि नरेंद्र मोदी चुनाव चोरी के ज़रिए प्रधानमंत्री बने हैं और भाजपा चुनाव चोरी में लिप्त है। एक भाजपा नेता द्वारा कथित तौर पर दो जगहों पर मतदान करने पर उन्होंने कहा कि मैंने एक प्रेजेंटेशन दिया था कि हरियाणा चुनाव कोई चुनाव नहीं थे। वहाँ थोक चोरी हुई। मेरे द्वारा लगाए गए आरोपों - फ़र्ज़ी वोट, फ़र्ज़ी तस्वीर - पर चुनाव आयोग की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। भाजपा इसका बचाव कर रही है, लेकिन मेरी बात को नकार नहीं रही है। मीडिया छोटे-छोटे उदाहरण उठा रहा है, जैसे एक ब्राज़ीलियाई महिला ने वोट दिया। एक ब्राज़ीलियाई नागरिक की तस्वीर पर वोट कैसे हो गया? इसके अलावा, गांधी ने आरोप लगाया कि भारत का चुनाव आयोग, प्रधानमंत्री मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के साथ मिलकर चुनाव परिणामों में हेरफेर करके भारत के संविधान पर हमला कर रहा है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि वास्तविकता यह है कि नरेंद्र मोदी जी, अमित शाह जी और चुनाव आयोग मिलकर संविधान पर हमला कर रहे हैं। संविधान कहता है एक व्यक्ति, एक वोट। हरियाणा दिखाता है कि वहाँ एक व्यक्ति, एक वोट नहीं था। वहाँ एक व्यक्ति, अनेक वोट था...ये बिहार में भी यही करने जा रहे हैं। ऐसा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, हरियाणा और गुजरात में हुआ।

प्रियंका गांधी की सीईसी ज्ञानेश कुमार को सीधी चेतावनी- शांति से रिटायर नहीं होंगे आप

नई दिल्ली। बिहार विधानसभा चुनाव की सरगर्मी के बीच राज्य में राजनीतिक तनाव बढ़ गया है। कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी ने रैली में एक रैली के दौरान मुख्य चुनाव आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार और दो अन्य अधिकारियों पर खुलेआम निशाना साधकर आग में घी डालने का काम किया। मंच पर प्रियंका गांधी ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को कड़ी चेतावनी देते हुए कहा कि ज्ञानेश कुमार, अगर आप सोचते हैं कि आप शांति से रिटायर हो जाएंगे, तो ऐसा नहीं होगा।

मैं जनता से कहती हूं, ज्ञानेश कुमार का नाम कभी मत भूलना। उन्होंने एस.एस. संधू और विवेक जोशी का भी नाम लिया और जनता से उनके नाम याद रखने की अपील की, जिस पर उनके समर्थकों ने चोर-चोर के नारे लगाए। प्रियंका गांधी ने कथित मतदान अनियमितताओं की आलोचना की और हरियाणा में कथित तौर पर वोटों से छेड़छाड़ का जिक्र किया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि जनता उन्हें धोखा देने की कोशिशों को माफ़ नहीं करेगी। उन्होंने अपनी चेतावनी दोहराते हुए कहा कि ज्ञानेश कुमार, एस.एस. संधू और विवेक जोशी सहित इसमें शामिल लोगों को, अगर लगता है कि गलत कामों पर ध्यान नहीं दिया जाएगा, तो उन्हें चैन से सो जाने की उम्मीद नहीं करनी चाहिए। इससे पहले, राहुल गांधी ने भी चुनाव आयोग पर निशाना साधते हुए दावा किया था कि 2024 के हरियाणा विधानसभा चुनावों के दौरान नतीजों में हेरफेर करने के लिए 25 लाख फर्जी वोटों का इस्तेमाल किया गया था। उन्होंने दावा किया कि चुनाव से पहले जानबूझकर कांग्रेस समर्थकों के वोट कम किए गए थे, और अपने बयान को 100फीसदी सच बताया।

प्रियंका गांधी की टिप्पणी की राजनीतिक विरोधियों ने आलोचना की है और चल रही चुनावी प्रक्रिया के दौरान राजनीतिक भाषण की सीमाओं और चुनाव अधिकारियों को धमकाने के औचित्य पर सवाल उठाए हैं। बिहार में चुनाव पूरे जोरों पर है, ऐसे में यह विवाद आने वाले दिनों में सुर्खियों में रहने की संभावना है। बिहार विधानसभा चुनाव दो चरणों में हो रहे हैं, पहले चरण में 121 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए और दूसरे चरण में, जो 11 नवंबर को होना है, शेष 122 निर्वाचन क्षेत्रों के लिए मतदान होगा। सभी सीटों के लिए मतगणना 14 नवंबर को होगी, जिससे राज्य में अगली सरकार का फैसला होगा। इस महत्वपूर्ण चरण में, चुनावी मैदान में प्रमुख नेताओं में भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव और भाजपा के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी शामिल हैं।

आरएसएस-भाजपा ने कभी नहीं गाया वंदे मातरम, सिर्फ नमस्ते सदा वत्सले : खड़गे का बड़ा वार

नई दिल्ली। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने शुक्रवार को भाजपाऔर आरएसएस पर इस गीत के 150 साल पूरे होने का जश्न मनाने और अपने कार्यालयों, शाखाओं, अपने ग्रंथों या साहित्य में इसे छूटने का आरोप लगाया, जबकि यह गीत भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक लोकप्रिय नारा है। खड़गे के अनुसार, आरएसएस भारत के राष्ट्रीय गीत की बजाय संगीतमय प्रार्थना नमस्ते सदा वत्सले गाना पसंद करता है। कांग्रेस पार्टी की परंपराओं से इसकी तुलना करते हुए, उन्होंने बताया कि 1986 से लेकर आज तक, कांग्रेस की हर बैठक, चाहे वह पूर्ण अधिवेशन हो या ब्लॉक स्तरीय बैठक, नेताओं ने वंदे मातरम गाया है। खड़गे ने गीत की 150 वीं वर्षगांठ पर जारी एक आधिकारिक बयान में कहा कि यह बहुत ही विडंबनापूर्ण है कि जो लोग आज राष्ट्रवाद के स्वयंभू संरक्षक होने का दावा करते हैं - आरएसएस और भाजपा, उन्होंने कभी भी अपनी

शाखाओं या कार्यालयों में वंदे मातरम या हमारा राष्ट्रगान जन गण मन नहीं गाया। इसके बजाय, वे नमस्ते सदा वत्सले गाते रहते हैं, जो राष्ट्र का नहीं, बल्कि उनके संगठनों का महिमामंडन करने वाला गीत है। 1925 में अपनी स्थापना के बाद से, आरएसएस ने वंदे मातरम से परहेज किया है, इसके सार्वभौमिक सम्मान के बावजूद। इसके ग्रंथों या साहित्य में एक बार भी इस गीत का उल्लेख नहीं है। खड़गे की यह टिप्पणी ऐसे समय में आई है जब आज ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नई दिल्ली में इस गीत की 150वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह में भाग लिया, जहाँ उन्होंने एक स्मारक डाक टिकट जारी किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी बिहार के पटना में एक कार्यक्रम में शामिल हुए, जहाँ उन्होंने एक साल तक चलने वाले राष्ट्रव्यापी अभियान की घोषणा की। स्वतंत्रता संग्राम में संघ की भूमिका की आलोचना करते हुए, खड़गे ने कहा कि यह सर्वविदित तथ्य है कि आरएसएस ने अंग्रेजों का समर्थन किया, राष्ट्रीय ध्वज फहराने से इनकार किया, संविधान का दुरुपयोग किया और बाबा साहेब अंबेडकर के पुतले फूंके। खड़गे के बयान में कहा गया है, यह सर्वविदित तथ्य है कि आरएसएस और संघ परिवार ने राष्ट्रीय आंदोलन में भारतीयों के खिलाफ अंग्रेजों का समर्थन किया, 52 वर्षों तक राष्ट्रीय ध्वज नहीं फहराया, भारत के संविधान का दुरुपयोग किया, बापू और बाबा साहेब अंबेडकर के पुतले फूंके और सरदार पटेल के शब्दों में, गांधीजी की हत्या में शामिल रहे।

सर्दी की दस्तक... अगले 72 घंटे में बढ़ेगी ठंड

नई दिल्ली देश के कई इलाकों में मौसम ने करवट लेना शुरू कर दिया है। कहीं हल्की बारिश हो रही है तो कुछ हिस्सों में बर्फबारी का दौर जारी है। हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और उत्तर भारत के कुछ राज्यों में सर्दी धीरे-धीरे बढ़ने लगी है। वहीं, दिल्ली-एनसीआरमें प्रदूषण का स्तर खतरनाक श्रेणी में बना हुआ है। भारत मौसम विज्ञान विभाग ने अगले कुछ दिनों में ठंड बढ़ने की चेतावनी जारी की है। दिल्ली और आसपास के इलाकों में हवा की गुणवत्ता बेहद खराब में बनी हुई है। आईएमडी के मुताबिक, फिलहाल बारिश की कोई संभावना नहीं है, लेकिन अगले दो दिनों तक बादल छाए रहेंगे और ठंडी हवाएं चलेंगी, जिससे तापमान में हल्की गिरावट होगी और सर्दी का एहसास बढ़ेगा। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि उत्तर-पश्चिमी ठंडी हवाओं के चलते उत्तर प्रदेश में सर्दी का असर बढ़ेगा। फिलहाल दिन में हल्की धूप मिल रही है, लेकिन शाम और रात में ठंडी हवाएं मौसम को ठिठुरन भरा बना रही है।

बिहार चुनावः तेज प्रताप यादव का बड़ा बयान, जिसके पास बहुमत होगा, उसी के साथ जाएंगे

पटना।

बिहार विधानसभा चुनाव के माहौल में हर राजनीतिक बयान नए समीकरणों को जन्म दे रहा है. इसी कड़ी में राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव के बड़े बेटे तेज प्रताप यादव ने शुक्रवार (7 नवंबर) को एक बड़ा बयान दिया. तेज प्रताप ने कहा कि 14 तारीख को जनता जिसको चुनेगी, हम उसी का समर्थन करेंगे, चाहे वो कोई भी हो. उनके इस बयान ने राजनीतिक गलियारों में नई चर्चा छेड़ दी है. तेज प्रताप यादव ने कहा कि इस बार बिहार में जनता बदलाव चाहती है और 14 नवंबर को ये बदलाव साफ दिखाई देगा. उन्होंने कहा कि 14 तारीख को पूर्ण बदलाव होगा. मैं उसी का साथ दूंगा जो असली मुद्दों पर बात करेगा. रोजगार पैदा करेगा, पलायन रोकेगा और किसानों की समस्याओं को हल करेगा. उन्होंने साफ किया कि उनकी राजनीति किसी व्यक्ति या दल के खिलाफ नहीं, बल्कि जनता के हक के लिए है. हमारा मकसद सत्ता में आना नहीं, बल्कि जनता की आवाज बनना है. जो भी दल या नेता जनता के हित में काम करेगा, मैं उसका समर्थन करूंगा. जब उनसे पूछा गया कि क्या यह बयान एनडीए में शामिल होने की संभावना का संकेत है, तो उन्होंने कहा कि

राजनीति में दरवाजे बंद नहीं होते है. अगर कोई दल बहुमत लेकर आता है और जनता के लिए काम करने का वादा करता है, तो मैं उसका समर्थन करूंगा. लेकिन यह समर्थन शर्तों पर होगा और सिर्फ जनता के विकास के लिए होगा. अंत में तेज प्रताप यादव ने कहा कि जनता सबसे बड़ी ताकत है. 14 तारीख को वही फैसला करेगी कि बिहार का भविष्य कौन संभालेगा और मैं उसी जनता के फैसले के साथ रहूंगा. यह बयान साफ करता है कि बिहार चुनाव के इस चरण में तेज प्रताप यादव ने अपने लिए जनता समर्थक छवि बनाने की ठोस कोशिश की है. एक ऐसे नेता की, जो दल से ऊपर उठकर बिहार के हितों की बात कर रहा है. तेज प्रताप यादव के इस बयान को राजनीतिक विश्लेषक 'रणनीतिक लचीलापन' मान रहे हैं. कुछ इसे उनके व्यक्तिगत रुख का संकेत बता रहे हैं, जबकि कुछ का मानना है कि यह बयान राजद की पारंपरिक नीति से थोड़ा हटकर है. राजनीतिक जानकारों के अनुसार, तेज प्रताप की इस टिप्पणी ने बिहार की सियासत में नई हलचल मचा दी है. यह बयान न केवल एनडीए और महागठबंधन दोनों के लिए मायने रखता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि चुनावी नतीजों के बाद गठबंधन की राजनीति किस दिशा में जाएगी.